

स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर – औपनिवेशिक मानसिकता और भगवद्गीता का

भाषान्तरण¹

चैत्र एम्. एस्.

वरिष्ठ अध्येता, India Studies Unit,
Centre for Education & Social
Studies, बेंगलूरु

निर्देशक, आरोही अनुसंधान संस्था,
बेंगलूरु

chaitra78@gmail.com

डा। अश्विनी बी. देसाई

अध्येता, India Studies Unit,
Centre for Education & Social
Studies, बेंगलूरु

ashwini.b.desai@gmail.com

डा। तिलक एम. राव

अध्येता, India Studies Unit,
Centre for Education &
Social Studies, बेंगलूरु

rao.tilak@gmail.com

भूमिका

एक संस्कृति के किसी ग्रन्थ को अन्य संस्कृति की भाषा में भाषान्तरण करते समय अनेक समस्याएं खड़ी होती हैं। उन्हें साधारण तौर पर विद्वान लोग भाषा की समस्या समझकर चर्चा करते हैं। वह भाषा की समस्या कि अपेक्षा सांस्कृतिक भिन्नता से संबंधित समस्या है ऐसा हमने “सांस्कृतिक भिन्नता एवं भाषान्तर”² तथा “कौटिल्य की अर्थशास्त्र में सार्वभौमिकता (sovereignty) शब्द का भाषान्तर एवं भारतीय राजनैतिक सोच के संबंध में हमारी समझ”³ नामक पिछले दो लेखों में विचार किए हैं। इनमें से पहले लेख में

¹ स्त्रीपु दुष्टासु और अन्य कई श्लोकों पर एस. एन. बालगंगाधर और एम. एस. चैत्र इनके बीच २०१६ में चर्चा प्रारंभ हुई। २०१७ में अंतरजाल के माध्यम से एस. एन. बालगंगाधर जी एक भारत-अमरीकी समूह को गीता जैसे अन्य भारतीय विषयों के बारे में पढ़ाते समय स्त्रीपु दुष्टासु श्लोक के संबंध में चर्चाएं हुईं। इन विचारों को आगे बढ़ाकर २०१८ में सारिका राव ने एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में इस श्लोक पर निबंध प्रस्तुत किया। बाद में आरोहि संस्था द्वारा आयोजित १२ दिनों की गीताध्ययन की कार्यशाला में इस श्लोक पर चर्चा हुई। उसी वर्ष में एक पुस्तक लोकार्पण के कार्यक्रम में एस. एन. बालगंगाधर जी ने इस विषय को प्रस्तुत किया। बाद में उसी वर्ष में आरोहि संस्था के एम. एस. चैत्र, अश्विनी बी. देसाई और हर्षित जोसेफ इन्होंने इस विषय पर चिंतन को आगे बढ़ाकर उनके परिणामों को अश्विनी बी. देसाई ने reading Indian texts कार्यशाला में प्रस्तुत किया। २०१९ में लगभग १८ दिनों तक हुई गीताध्ययन सत्र में इस विषय पर फिर से चर्चा हुई। उसी वर्ष एस. एन. बालगंगाधर जी ने इस विषय पर आधारित The Varnasamkara Verses Part III: Gendering Gita नामक एक अप्रकाशित लेख लिखा। उसी वर्ष उज्जिरे में हुई एक कार्यशाला में एम. एस. चैत्र ने इस विषय पर दो दिन के समय में व्याख्यान दिए। साल २०२० के प्रारंभ में आरोहि संस्था से आयोजित अंतरजाल व्याख्यान में एस. एन. बालगंगाधर जी ने फिर से इस विषय को प्रस्तुत किया। उसी वर्ष एम. एस. चैत्र ने कुवेंपु भाषाभारती अंतरजाल सत्र में इस विषय पर आधारित एक भाषण दिया। उतना ही नहीं, इस विषय पर अनेक लोगों से विभिन्न प्रसंगों में चर्चाएं हुई हैं। यह लेख इन सब विचार – विमर्श का परिणामस्वरूप है।

² हर्षित, जोसेफ और चैत्र एम्. एस्. २०२०।

³ तिलक, राव और चैत्र, एम्. एस्. २०२१। (अप्रकाशित लेख, कुवेंपु भाषाभारती प्राधिकार की भाषाभारती शोधपत्र के अंक ३ में प्रकाशित होगा।)

अंग्रेज़ी कि एक पद्य को कन्नड़ भाषा में भाषान्तर करने से होनेवाली समस्या पर विचार किया गया है। उसके लिए उदाहरण के तौर पर बि.एम्.श्री के अनुवाद से विल (will) शब्द को लेकर दिखाया गया है कि एक धारणा से संबंधित विल (will) शब्द को “इच्छा” अर्थ में भाषान्तर करने से वह सार्थक नहीं होगा, इतना ही नहीं मूलभाषा के उस शब्द का अर्थ भी मरोड़ा जाता है। दूसरे लेख में यह विचार किया गया है कि ‘अर्थशास्त्र’ जैसे संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थ के एक शब्द को अंग्रेज़ी में भाषान्तर करने से अर्थशास्त्र का अर्थ कैसे विकृत हो जाता है। उपरोक्त समस्या को भाषासमस्या न बनाकर सांस्कृतिक भिन्नता की अज्ञानता कि दृष्टि से विचार किया गया है। वर्तमान लेख सांस्कृतिक भिन्नता से उत्पन्न होने वाली एक और समस्या का विस्तार करता है। यहाँ देखा जा सकता है कि इन भाषान्तरणों से भारतीय संस्कृति के बारे में पाश्चात्य संस्कृति की धारणाएँ कैसे पुनरुत्पन्न होती हैं तथा भारतीय संस्कृति के बारे में चिंतन करने की संभावनाएँ समाप्त होने से हमारे अनुभव को भी पराया बना देते हैं।

१. गीता का पुनर्व्याख्यान और भाषान्तरण

आचार्यत्रयों (शंकर, मध्व, रामानुज) से शुरू होकर प्राचीन काल से अनेक लोगों ने गीता पर विचार किए हैं। प्राचीन भारतीय परम्परा के पाठ्यक्रम के प्रस्थानत्रय⁴ में गीता पहला ग्रंथ है। आधुनिक युग में भी गीता पर अनेक व्याख्यान हुए हैं। अनेक विद्वानों द्वारा किए गए गीता के व्याख्यान⁵ मिलते हैं, जैसे कि बालगंगाधर तिलक का ‘गीता रहस्य’⁶, अरोबिंदो के ‘एसेस ओन दि गीता (Essays on the Gita)’⁷, प्रसिद्ध इतिहासकार डी. डी. कोसांबि का ‘सोशियल आन्ड एकोनोमिक एस्पेक्ट्स ओफ दि भगवद् गीता (Social and Economic aspects of the Bhagavad Gita)’⁸, अंबेडकर का ‘रेवोल्यूषन् आन्ड कौन्टर-रेवोल्यूषन् इन् एन्शियन्ट इन्डिया (Revolution and Counter-revolution in Ancient

⁴ परंपरागत शास्त्राध्ययन क्रम में भागवद्गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र को प्रस्थानत्रय कहा जाता है।

⁵ भगवद्गीता के अलग अलग दृष्टिकोण के बारे में अध्ययन के लिए – संचय २०१६, अंक १११-११३।

⁶ अधिक अध्ययन के लिए ‘गीता रहस्य’ ग्रंथ को देख सकते हैं। गीतारहस्य, परागप्रकाशन, २०२०।

⁷ अधिक अध्ययन के लिए – Sri Aurobindo, Essays on the Gita, Sri Aurobindo Ashram; 9th edition, 2000.

⁸ Kosambi 1961: 198 – 224.

India)⁹, डी. वी. गुंडप्प का प्रख्यात 'जीवनधर्मयोग'¹⁰। बात यह है कि सदियों से गीता ने लोगों को आकृष्ट किया है। सदियों तक गीता पर अनेक भारतीय चिंतकों के भाष्य, टीका इत्यादि के अनेक भाषाओं में रूपांतर – भाषान्तर ही इसका प्रमाण है। ज्ञानेश्वरी¹¹, कुमारव्यासभारत¹² जैसे पुनर्व्याख्यान हैं, यूरोप-अमरीका के लोगों के भाषान्तरण है। पश्चिमियों में विशेषतः जर्मन लोगों को गीता में उत्सुकता दिखाई देती है। १८वीं सदी के पूर्वार्ध और १९वीं सदी में जे. जी. हर्डर, एफ़. डब्ल्यू. श्लेगल और हुम्बोल्ट जैसों ने गीता के अपने पसंदीदा श्लोकों का जर्मन में अनुवाद किया। हुम्बोल्ट ने गीता की तारीफ़ में ऐसा लिखा कि वह 'एक अनोखा दार्शनिक ग्रंथ है'¹³। हुम्बोल्ट के पश्चात आए जर्मन के इन्दोलजि (Indology) के विद्वान भी इसकी प्रशंसा करते हैं। और यह भी कहते हैं, कि गीता उनके ईसाई मत के सिद्धांतों का प्रतिपादन करती है¹⁴। लेकिन प्रसिद्ध पश्चिमी चिंतक हेगेल ने यह आक्षेप किया है कि गीता जातिवाद को बढ़ावा देती है तथा वह एक असभ्य और असमंजस प्रथाओं को बताने वाला ग्रंथ है¹⁵। इस तरह जगभर में गीता पर अनेक विलक्षण टिप्पणियाँ हुई हैं। इतनी चर्चा होने के बावजूद भी गीता से संबंधित अनेक समस्याएँ और गरमागरम बहस हुए हैं, फिर भी उलझनों से घिरी हुई गीता और जटिल बन गई है। इसीलिए आज भी शैक्षिक और पारंपरिक क्षेत्र में यह जिज्ञासा है कि गीता का अध्ययन किस तरह से किया जाए।

१.१. वर्तमान लेख का व्याप्ति और विषय

⁹ अधिक अध्ययन के लिए – <http://drambedkar.co.in/wp-content/uploads/books/category1/6revolutionandcounterrevolution.pdf>. Retrieved on 16.11. 2021.

¹⁰ अधिक अध्ययन के लिए – डी.वी.जी., जीवनधर्मयोग, काब्यालय प्रकाशन, २०१४। (कन्नड़ में)

¹¹ ज्ञानेश्वरी संत ज्ञानेश्वर द्वारा रचित गीता की मराठीव्याख्या है।

¹² महाभारत की पुनर्व्याख्याओं में गीता पर भी विचार किया गया है। कर्नाटभारत कथा मंजरी, कुमारव्यास भारत, जैमिनी भारत जैसे कृतियाँ महाभारत के पुनर्निरूपण हैं। (सभी कन्नड़ के हैं)

¹³ "liv[ing] up, more than any other work of this kind, come down to us from any other nation, to the true and genuine concept of a philosophical poem." Adluri & Bagchee 2014:34.

¹⁴ Adluri & Bagchee 2014.

¹⁵ Rathore & Mohapatra 2016. <https://thewire.in/books/hegels-india-bhagvad-gita>. Retrieved on 16.11.2021.

यह वर्तमान लेख इन सभी भाषान्तरण या व्याख्याओं के बारे में चर्चा नहीं करती है। और यह सम्पूर्णगीता के भाषान्तरणों से संबंधित भी नहीं है। यह लेख भगवद्गीता के पहले अध्याय में उल्लेखित वर्णसंकर से संबंधित कुछ विशेष श्लोकों के बारे में है। गत कुछ २०० वर्षों से वर्णसंकर के बारे में इन्हीं कुछ श्लोकों का उद्धरण करके यह बताया जा रहा है कि, गीता अंतर्जातीय विवाह का विरोध करती है, और पुरुषप्रधान व्यवस्था¹⁶ का निरूपण करती है। तथा इन्हीं श्लोकों के आधार पर 'हिंदूधर्म' में स्त्रियों की स्थिति और अंतर्जातीय विवाह के बारे में अनेक तरह की चर्चाएँ की गई है¹⁷। तो भगवद्गीता में वर्णसंकर से संबंधित कुछ श्लोकों के सामाजिक और राजनैतिक पहलू होने के कारण इस लेख में सिर्फ उन्हीं श्लोकों के भाषान्तरणों को परखेंगे।

१.१.१. विवादग्रस्त श्लोक

उपरोक्त समीक्षा के लिए गीता के पहले अध्याय के कुछ श्लोक इस लेख में लिए गए हैं। पहले अध्याय में अर्जुन के बातों में हमें वर्णसंकर का उल्लेख मिलता है। वहाँ के कथानुसार दुर्योधन द्रोणाचार्य को युद्धभूमि में स्थित व्यक्तियों का परिचय करवाता है। बाद में युद्धभूमि के बीचोबीच कृष्ण के साथ अर्जुन आकर अपने स्वजनों को देखकर कृपाविष्ट होकर युद्ध न करने के कारण देता है। उनमें वर्णसंकर का उल्लेख है। वहाँ के श्लोकों के अर्थ कुछ इस तरह हैं :-

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।

¹⁶ उदाहरण के लिए – “The Kaliyuga of the future is just such a time when women of the high castes and men of the low castes will ingress from their duties. The Bhagavad Gita, the normative text par excellence of the Hindus, outlines the collapse of the social and moral order when there are leakages in the closed structure of marriages. Families are broken, rites are forgotten, women are defiled and from this corruption comes the mixing of castes [Gita I: 41-44].” Chakravarti 1993.

¹⁷ स्पष्टता के लिए – “Remember that Trotsky used the word “caste” to point out that the bureaucratic Stalinist state was akin to the age-old Asiatic caste structure where all forms of human morality was erased (2005: 40, 2006: 102, 214, 256). Revolutionary Marxism thus has to note what Ambedkar meant by saying: “Hindu society had its morals loosened to a dangerous point” (1943: 30), and what Hegel meant when he said that there is no “moral sentiment” with the ruling ideology of India. This is because the ruling ideology of Hinduism is based on the prohibition of the mixture of castes, i e, prohibition of the varna-sankara (Hegel 1995: 17, 19, 51)” Jal 2014: 41- 49.

धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नम् अधर्मोभिभवत्युत ॥४०॥

कुल का नाश होने से सनातन कुलधर्म जो है वह भी नष्ट हो जाता है। और कुलधर्म नष्ट होने से समस्त
कुल में अधर्म बढ़ जाता है।

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।

स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ॥४१॥

हे कृष्ण! अधर्म बढ़ जाने से कुलस्त्रियाँ दोषयुक्त हो जाती हैं। हे वार्ष्णेय! स्त्रियों का दुष्ट होने से वर्णसंकर
हो जाता है।

सङ्करो नरकायैव कुल्मसानां कुलस्य च।

पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

और संकर के कारण कुल और कुलनाशियों को नरक प्राप्त होता है। उनके पितृलोग बिना पिंडदान और
जलतर्पण से गिरे हुए हो जाते हैं।

दोषैरेतैः कुल्मसानां वर्णसङ्करकारकैः।

उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माः च शाश्वताः ॥४३॥

वंश का नाश करने वालों के वर्णसंकर के कारण होने वाले दोषों से अविनाशि कुलधर्म और जातिधर्म का
नाश हो जाता है।

इन श्लोकों में से “अधर्माभिभवात्” श्लोक का प्रमुख तौर से चर्चा होती है। इस श्लोक का साधारण
अर्थ ऊपर दिया गया है। उसमें दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों के अर्थ के आधार पर पूर्ण श्लोक का अर्थनिर्णय
कर सकते हैं। इस श्लोक के दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों के अर्थ भाषान्तर में कैसे समझे हैं इसको देखने
के लिए कुछ अंग्रेज़ी और कन्नड़ (हिंदी में अनुवादित) भाषान्तर उदाहरण के तौर पर दिए गए हैं।

२. कुछ अंग्रेज़ी/कन्नड़ भाषान्तर और उनसे प्राप्त अर्थ

२.१. अंग्रेज़ी भाषान्तर :

1. The family women are corrupted; when women are corrupted, o Krishna, the intermixture of caste is born. (Winthrop Sargeant)

2. Krishna, when vice prevails, the women of the family become unchaste; the corruption of the women leads to mixture of the varnas! (Mikhail Nikolenko)

3. Its women grow unwomaned, whence there spring Mad passions, and the mingling-up of castes, (Sir Edwin Arnold)

4. From the influence of impiety, the females of the family grow vicious; and from women that are become vicious are born spurious brood called Varna-sankara. (Charles Wilkins)

5. Owing to predominance of lawlessness, O Krishna, the women of the family become corrupt; women corrupted, O Varshneya, the confusion of the Varnas arises. (Sri Aurobindo Ghosh)

6. When irreligion is prominent in the family, O Krishna, the women of the family become corrupt, and from the degradation of womanhood, O descendant of Vrishni comes unwanted progeny. (Swami Prabhupada)

7. When unrighteousness prevails, O Krishna, the women of the family become corrupt, and their corruption, O Varshneya, causes a confusion of varnas. (The Gita According to Gandhi)

8. Krishna! When evil arises, the women of the family become corrupted. O descendant of the Vrishnis! When the women are corrupted, hybrid castes are born. (Bibek Debroy)

9. O Krishna, from lack of religion the women of the family become bad. O Varshneya (Krishna), women being thus contaminated, adultery is engendered among castes. (Sri Sri Paramahansa Yogananda)

२.२. कन्नड़ भाषान्तर (हिंदी में अनुवादित) :

१०. हे कृष्ण, परिवार में जब अधर्म बढ़ जाता है, तब कुलस्त्रियाँ *नीतिभ्रष्ट होकर अनिष्ट संतान* पैदा करती हैं। (स्वामी प्रभुपाद)

११. हे कृष्ण, अधर्म बढ़ जाने से कुलस्त्रियाँ *दूषित हो जाती हैं* अर्थात् व्यभिचारी बन जाते हैं और हे वार्ष्णेय, स्त्रियाँ *दूषित होने* से वर्णसंकर होता है। अलग-अलग वर्ण के स्त्री और पुरुष से पैदा हुए संतान को वर्णसंकर कहते हैं। (साधकसंजीविनी व्याख्या)

१२. हे कृष्ण, अधर्म फैल जाने से कुलस्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं। हे वृष्णि के वंशज, स्त्रियों के *बिगड़ जाने से वर्णों का मिलावट हो जाता है*। (श्री श्री सच्चिदानंद सरस्वती स्वामी)

१३. “प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः” – घरवालियाँ *बिगड़ जाती हैं* “जायते वर्णसङ्करः” – *जातिकुलों का मिलावट हो जाता है*। (डी. वी. जी)

२.३. ‘प्रदुष्यन्ति दुष्टासु’ और वर्णसंकर – इनके भाषान्तरण

पूर्वोक्त “अधर्माभिभवात्” श्लोक का अर्थ समझने के लिए *दुष्टा* और *वर्णसङ्कर* इन दो शब्दों का अर्थ जानना आवश्यक है। श्लोक में *दुष्टासु* शब्दप्रयोग में *दुष्टा* शब्द है। *दुष्टा* शब्द ‘दुष्’ धातु से बना

है¹⁸। प्रदुष्यन्ति क्रियापद भी उसी धातु से बना है। प्रदुष्यन्ति और दुष्टा ये दोनों शब्द एक ही धातु से उत्पन्न होने के कारण इन श्लोकों के भाषान्तरणों में इन शब्दों का अर्थ एक समान लिया गया है। निम्नलिखित कोष्ठक में 'दुष्' धातु से उत्पन्न प्रदुष्यन्ति तथा दुष्टा शब्द और वर्णसङ्कर शब्दों के भाषान्तरण का संग्रह किया गया है।

लेखक	प्रदुष्यन्ति	दुष्टासु	वर्णसङ्करः
Bibek Debroy	become corrupted	Corrupted	Hybrid castes
Charles Wilkins	grow vicious	Vicious	Spurious brood
Mahatma Gandhi	become corrupt	Corruption	Confusion of varnas
Mikhail Nikolenko	become unchaste	Corruption	Mixture of the varnas
Sir Edwin Arnold	grow unwomaned	Mad passions	The mingling-up of castes
Sri Aurobindo Ghosh	become corrupt	Corrupted	The confusion of the varnas

¹⁸ 'दुष्' धातु के लिए 'क्त'प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग में 'दुष्टा' (दुष् + क्त + टाप्) शब्द मिलता है ।
<https://kosha.sanskrit.today/word/sa/duSTA?q=%E0%A4%A6%E0%A5%81%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A4%BE> Retrieved on 17.11.2021.

Sri Paramahansa Yogananda	Sri become bad	contaminated	adultery is engendered among castes
Swami Prabhupada	become corrupt	Corruption	unwanted progeny
Winthrop Sargeant	are corrupted	Corrupted	Intermixture of caste
स्वामी प्रभुपाद		नीतिभ्रष्ट होने से	दुष्ट/अनिष्ट संतान
साधकसंजीविनी व्याख्या	व्यभिचारी हो जाते हैं		संतान
श्री श्री सच्चिदानंद सरस्वती स्वामी	कलंकित हो जाते हैं	कलंकित होने से	वर्णों में मिलावट
डी. वी. जी	बिगड़ जाते है		जातिकुलों का मिलावट

इस कोष्ठक में दुष्टा, प्रदुष्यन्ति और वर्णसङ्कर इन तीन शब्दों का उल्लेख है लेकिन जैसे कि पहले बताया गया दुष्टा और प्रदुष्यन्ति ये दो शब्द एक ही धातु से उत्पन्न हुए हैं। तो इन श्लोकों में प्रदुष्यन्ति को क्रियापद के रूप में और दुष्टासु को स्त्रियों के विशेषण के रूप में प्रयोग किए जाने पर भी इनके अर्थ में अधिक अंतर नहीं है। इसलिए उपरोक्त अनुवादकों ने स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर को कैसे समझा है, सिर्फ इन दो विचारों पर हम ध्यान देंगे। यह स्पष्ट हो जाने से “अधर्माभिभवात्” श्लोक का अर्थ समझ सकते हैं।

२.४. अंग्रेज़ी भाषान्तर से प्राप्त अर्थ

उपरोक्त अंग्रेज़ी भाषान्तरणों को देखने पर पता चलता है कि अनेक अनुवादकों ने स्त्रियों का दुष्ट होना - करप्ट (corrupt) होना इस अर्थ में अनुवाद किया है। करप्ट (corrupt) शब्द का मुख्य अर्थ शब्दकोश में कुछ इस तरह मिलता है :- to cause (someone or something) to become dishonest, immoral, etc.¹⁹। इस तरह दुष्ट शब्द को corrupt में भाषान्तरण करने से यह अर्थ मिलता है कि स्त्रियों के व्यवहार के लिए एक मानदंड है और उसके अनुसार व्यवहार न करने से वह दुष्ट हो जाती हैं। इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि दुष्ट होना किस कार्य से संबंधित है। इसी तरह गीता को पहली बार अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाले चार्ल्स विल्किन्स (Charles Wilkins) ने दुष्ट शब्द को विशियस् (vicious) शब्द में अनुवाद किया है। इस शब्द का अर्थ कुछ इस तरह है:- having the nature or quality of vice or immorality²⁰। अगर यह अर्थ उपरोक्त श्लोक में उचित लगता है तो समान अर्थ में करप्ट (corrupt) शब्द भी प्रयोग किया गया है। उसी तरह एड्विन अर्नोल्ड (Edwin Arnold) के ग्रो अन्वुमन्ड (grow unwomaned) पद के प्रयोग करने से यह अर्थ निकलता है कि स्त्रियों का जैसे होने चाहिए वैसे न होना। और श्री परमहंस योगानंद के द्वारा प्रयुक्त कन्टामिनेट (contaminate) शब्द भी इसी तरह है। तो हम यह निर्णय कर सकते हैं कि लगभग सारे अनुवादकों ने यह समझकर भाषान्तरण किए हैं कि स्त्रियों का दुष्ट होना याने उनका व्यवहार अपेक्षित रीति से न होना। इन उदाहरणों से तो स्त्रियों का दुष्ट होने का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। लेकिन कुछ अनुवादकों ने इस पर अधिक स्पष्टीकरण दिए हैं।

जैसे कि उपरोक्त कोष्ठक में देखा है मिखायेल निकोलेन्को (Mikhail Nikolenko) ने स्त्रियों का दुष्ट होने को मैथुन से संबंधित अर्थ में भाषान्तरण किया है। उसने 'स्त्रियों का दुष्ट होना' इसका विवरण करने के लिए अचैस्ट (unchaste) शब्द का प्रयोग किया है और उस शब्द का अर्थ शब्दकोश में कुछ इस तरह है:- abstention from unlawful sexual intercourse²¹। इसके अनुसार स्त्रियों का दुष्ट

¹⁹ <https://www.merriam-webster.com/dictionary/corrupt> Retrieved on 17.11.2021.

²⁰ <https://www.merriam-webster.com/dictionary/vicious> Retrieved on 17.11.2021.

²¹ <https://www.merriam-webster.com/dictionary/chastity> Retrieved on 17.11.2021.

होना मैथुन से संबंधित है, यह तो निर्विवाद है। और उनके भाषान्तरण में प्रदुष्यन्ति शब्द का विवरण करने के लिए अचेस्ट (unchaste) शब्द का प्रयोग किया गया है और दुष्टा शब्द को करप्शन् (Corruption) शब्द में अनुवाद किया गया है। इससे यह समझ आता है कि करप्शन् (Corruption) शब्द का अलग-अलग प्रसंगों में अलग-अलग अर्थ होने पर भी इस श्लोक में मैथुन से संबंधित अर्थ में समझा गया है। बाकि भाषान्तरणों में यद्यपि स्पष्टरूप से स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से संबंधित है, ऐसा नहीं कहा गया है लेकिन वर्णसंकर शब्द का भाषान्तरण देखने पर यह निर्णय कर सकते हैं कि बाकि अनुवादक स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से संबंधित अर्थ में ही समझे हैं। उदाहरण के लिए, स्वामी प्रभुपाद और चार्ल्स विल्किन्स (Charles Wilkins) ने वर्णसंकर शब्द के लिए संतति के अर्थ वाले शब्दों (अन्वान्टड प्रोजनि [unwanted progeny], स्प्यूरियस् ब्रूड [spurious brood]) का प्रयोग किया है। यदि स्त्रियों के दुष्ट होने से संतति उत्पन्न होते हैं तो उनका दुष्ट होने को मैथुन से ही संबंध लगाना अनिवार्य होगा। तो यह मान सकते हैं कि स्वामी प्रभुपाद और चार्ल्स विल्किन्स (Charles Wilkins) इन दोनों ने दुष्ट शब्द को मैथुन से संबंधित ही समझा है। इसी तरह श्री परमहंस योगानंद जी ने वर्णसंकर शब्द को सीधे अडल्ट्री (adultery) शब्द में भाषान्तरण करने के कारण यह अर्थ निकलता है कि 'स्त्रियों का दुष्ट होना' मतलब नैतिक स्तर पर भ्रष्ट हो जाना है और तब वर्णसंकर होता है, यानी वर्णसम्बन्धि स्त्रियाँ परपुरुषों से शारीरिक संबंध पाते हैं, ऐसा अर्थ निकलता है। तो इन्होंने भी स्त्रियों का परपुरुषों से मैथुन के संबंध में ही इस श्लोक को समझा है। इस तरह कुछ अनुवादकों ने स्पष्टार्थ से भाषान्तरण किया है कि स्त्रियों का दुष्ट होना परपुरुषों से शारीरिक संबंध रखना है।

और कुछ अनुवादकों ने स्त्रियों का दुष्ट होने का अर्थ यद्यपि सीधे-सीधे नहीं कहा है, फिर भी उनके वर्णसंकर शब्द के भाषान्तरण में संतति या मैथुन जैसे अर्थ लगाने के कारण यह स्पष्ट होता है कि दुष्ट होना मैथुन से संबंधित है। कुछ अनुवादकों ने यह स्पष्ट कहा है कि दुष्टा शब्द मैथुन से संबंधित है और इस श्लोक की चर्चा मैथुन और संतति से संबंधित है। बाकि भाषान्तरणों में सीधे संतति जैसे शब्दों का प्रयोग तो नहीं है फिर भी कुछ शब्दों का प्रयोग है जिनसे यह मान सकते हैं कि यह श्लोक मैथुन और संतति के बारे में है। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने वर्णसंकर शब्द के भाषान्तरण के लिए हाईब्रिड कास्ड (Hybrid

castes), इन्टर्मिक्सचर् ओफ़ कास्ट (Intermixture of caste) जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। उनमें से हाईब्रिड कास्ट (Hybrid castes) शब्द प्रयोग में हाईब्रिड (Hybrid)²² शब्द का उपयोग दो से अधिक वस्तुओं के जुड़ने से उत्पन्न एक मिश्रण के लिए किया जाता है। इसलिए हाईब्रिड कास्ट (Hybrid castes) को इस तरह मानना होगा कि यह कम से कम दो कास्ट (caste) मिलकर उत्पन्न हुआ एक और caste है। लेकिन स्त्रियों का दुष्ट होने से हाईब्रिड कास्ट (Hybrid castes) उत्पन्न कैसे होते हैं? अगर स्त्रियाँ किसी का हत्या करके दुष्ट कहलाती हैं तो इस अपराध से तो हाईब्रिड कास्ट (Hybrid castes) उत्पन्न नहीं होते हैं। तो यह मानना पड़ेगा कि दो अलग जातियों के व्यक्तियों के काम संबंध से उत्पन्न संतति को हाईब्रिड कास्ट (Hybrid castes) कहा जाता है। उसी तरह स्त्रियों के दुष्ट होने से इन्टर्मिक्सचर् ओफ़ कास्ट (Intermixture of caste) यानी वर्णों का मिलावट होता है ऐसा कहना कुछ अलग बात नहीं है। इसलिए इन कुछ उदाहरणों में संतति से संबंधित स्पष्ट शब्द का प्रयोग नहीं है लेकिन संतति का अर्थ बताने वाले शब्दों का प्रयोग है। और जब वर्णसंकर शब्द को संतति का अर्थ लगाया जाता है तो स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से ही संबंधित होना है यह मानना पड़ेगा।

यहाँ हमारा यह वाद नहीं है कि सभी अनुवादकों ने वर्णसंकर शब्द को संतति में या स्त्रियों के दुष्ट होने को परपुरुषमैथुन के अर्थ में भाषान्तरण किया है। बल्कि इस श्लोक के सभी भाषान्तरण, श्लोक में स्थित दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों को पूर्वनिर्दिष्ट अर्थ के रूप में समझने के लिए पाठकों को प्रेरित करते हैं। भाषान्तरणों में प्रयुक्त शब्दों के विभिन्न प्रकार के अर्थ होने पर भी इस संदर्भ में सभी के अर्थ लगभग एक समान हैं। लेकिन यह कह नहीं सकते कि दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों के खास तौर से यही अर्थ है। उदाहरण के लिए, जब 'दुष्ट हाथी' शब्द का प्रयोग होता है तो यह समझते हैं कि यह लोगों को परेशान करने वाला हाथी है। इसी तरह 'दुष्ट वानर' शब्द का भी समान अर्थ है। इस तरह दुष्ट शब्द के अनेक अर्थ होने पर भी जब 'दुष्ट स्त्री' (स्त्रियों का दुष्ट होना) स्त्रीलिंग में प्रयोग किया जाता है तो इन भाषान्तरणों से मैथुन संबंधित अर्थ ही प्राप्त होता है। लेकिन इन भाषान्तरणों से यह स्पष्ट नहीं होता है कि जब लैंगिकता के

²² <https://www.merriam-webster.com/dictionary/hybrid> Retrieved on 17.11.2021.

अलावा अन्य कर्म भी दुराचार हो सकते हैं तो यह कैसे निश्चय किया गया कि स्त्रियों का दुराचार लैंगिकता से ही संबंधित है।

२.५. क्या कन्नड़ भाषान्तर अंग्रेज़ी भाषान्तरणों से विभिन्न है?

अगर हम देखें कि क्या अंग्रेज़ी भाषान्तरणों से कन्नड़ भाषान्तरण विभिन्न है तो यह स्पष्ट दिखाई देगा कि साधक संजीविनी व्याख्या और स्वामी प्रभुपाद के भाषान्तरणों²³ में स्त्रियों के दुष्ट होना मैथुन से संबंधित है जैसे कि अंग्रेज़ी भाषान्तरणों में है। लेकिन डी.वी.जी के और श्री श्री सच्चिदानंद सरस्वती स्वामीजी के कन्नड़ भाषान्तरणों में कोई विशिष्ट शब्द नहीं है जिससे यह निश्चय कर सकें कि कलंकित होना या बिगड़ जाने को कैसे समझा जाए। लेकिन वर्णसंकर शब्द को श्री श्री सच्चिदानंद सरस्वती स्वामीजी ने वर्णों में मिलावट के रूप में अनुवाद किया है और डी.वी.जी. ने जातिकुलों का मिलावट के रूप में अनुवाद किया है। जैसे कि पहले चर्चा की गई है कि यदि माने कि स्त्रियों का दुष्ट होना हत्या जैसे अपराध करना है तो उससे जातिकुलों का मिलावट कैसे हो सकता है। लेकिन अगर माने कि दो भिन्न जाति के व्यक्तियों के मैथुन से उत्पन्न संतति के बारे में कह रहे हैं तो यह अर्थ निकलेगा कि उत्पन्न संतति में जातियों का मिलावट है। तो कन्नड़ भाषान्तर भी इस श्लोक में मैथुन, संतति जैसे अर्थ दे रहे हैं। इसलिए देखा जाए तो अंग्रेज़ी और कन्नड़ भाषान्तरणों में कोई विशेष अंतर नहीं है।

३. उपरोक्त भाषान्तरणों के संबंध में

“अधर्माभिभवात्” श्लोक को समझने के लिए हमें स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर इन दोनों को समझना होगा। और स्त्रियों का दुष्ट होने से वर्णसंकर होता है ऐसा कहने से, इनमें से किसी एक शब्द (दुष्ट, वर्णसंकर) का अर्थ दूसरे शब्द के अर्थ को प्रभावित कर सकता है। इस संदर्भ में अगर भाषान्तरित श्लोकों पर विचार किया जाए तो पाठकों को इन श्लोकों का अर्थ स्त्रियों का मैथुन और संतति से संबंधित ही लगता है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि इन भाषान्तरणों से यह कैसे निश्चय किया गया कि इन श्लोकों

²³ स्वामी प्रभुपाद के अंग्रेज़ी भाषान्तरण का कन्नड़ अनुवाद। स्वामी प्रभुपाद कन्नड़ में नहीं लिखे हैं।

का अर्थ मैथुन और संतति से संबंधित है। और उपरोक्त अंग्रेज़ी और कन्नड़ भाषान्तरणों से स्त्रियों के दुष्ट होने से वर्णसंकर होता है, इसको समझने की दो संभावनाएँ दिखाई देती हैं। एक है कि स्त्रियों का 'अनैतिक' संबंध रखने के कारण अवांछित संतान पैदा होता है और दूसरा यह है कि स्त्रियों के चरित्रहीन होने से परपुरुषों से शारीरिक संबंध बन जाते हैं। लेकिन इन दोनों के बीच उतना फर्क तो नहीं है। “अधर्माभिभवात्” श्लोक को समझने के लिए इन दो संभावनाओं के अलावा और कुछ अर्थ यद्यपि होगा तो उस अर्थ को इन भाषान्तरणों से समझ नहीं सकते हैं।

३.१. क्या संस्कृति के अंतर्गत लोगों का भाषान्तरण श्रेष्ठ है?

हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि उपरोक्त भाषान्तरणों से जब भारतीय ग्रंथों को समझने की बारी आती है तब आम तौर पर सामने आनेवाली 'संस्कृति के अंतर्गत और बाहरी लोगों' (इन्साइडर-औटसाइडर [Insider-Outsider]) की चर्चा यहाँ किसी प्रकार से उपयुक्त नहीं है। यानी संस्कृत ग्रंथों के भाषान्तरणों की चर्चा के संबंध में सामान्यतः यह कहा जाता है कि संस्कृति के बाहरी लोगों (औटसाइडर Outsider) के भाषान्तरणों के अपेक्षा, संस्कृति के अंतर्गत लोगों (इन्साइडर Insider) के भाषान्तरण श्रेष्ठ होते हैं। लेकिन इस पर मतभेद है कि संस्कृति के अंतर्गत कौन है और बाहरी कौन है। एक मत यह है कि भारतीय लोग संस्कृति के अंतर्गत हैं और पश्चिमी संस्कृति के लोग बाहरी हैं। दूसरा मत है कि संस्कृत ग्रंथों को शास्त्रविधि से गुरुमुख से पढ़े हुए लोग अंतर्गत लोग हैं और बाकी सब बाहरी हैं। एक और प्रसिद्ध मत²⁴ यह है कि मात्र भारतीय संस्कृति में पैदा होने से या शास्त्रविधि से गुरुमुख से पढ़ने से कोई संस्कृति के अंतर्गत (इन्साइडर Insider) नहीं बनता; क्योंकि, यदि कोई पश्चिमी व्यक्ति भारतीय संस्कृति का सम्मान करता है और सनातनधर्म का पालन करता है तो वह भी संस्कृति के अंतर्गत का बन

²⁴ पहले के दो मत सामान्य जन और विद्वानों की चर्चाओं में प्रचलित हैं। तीसरा मत राजीव मल्होत्रा जैसे लोग प्रस्तुत करते हैं। इस विषय पर उनका कहना है – “My book frames these issues in terms of two opposing lenses: the lens of insiders, who are those with loyalty to the Vedic worldview, and lens of outsiders, who are those who dismiss (or at least marginalize) the Vedas and look at the Sanskrit texts primarily through Marxist and postmodernist theories of social oppression and political domination”. <https://rajivmalhotra.com/books/the-battle-for-sanskrit/insiders-versus-outsiders-who-speaks-for-our-heritage/33>. Retrieved on 09.20.2021.

जाता है और कोई भारतीय यदि सनातनधर्म का सम्मान नहीं करता है तो वह बाहरी (औद्वाइंडर Outsider) बन जाता है। ये विवाद कुछ भी हो, वर्तमान श्लोकों का भाषान्तरण तो भीतरी और बाहरी लोग दोनों ने भी एक समान किए हैं। इसलिए इस श्लोक को समझने के लिए ये वाद-विवाद व्यर्थ है। इससे यह स्पष्ट है कि इस श्लोक के अर्थ को समझने के लिए इन विवादों के होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता है।

३.२. भाषान्तरणों को मानने के परिणाम

तो इन भाषान्तरणों को देखने से स्पष्टरूप से कह सकते हैं कि यह श्लोक मैथुन-संतति इत्यादि से संबंधित है। अगर इसके अलावा कोई अर्थ होगा भी तो वह इन भाषान्तरणों से नहीं जान सकते हैं। और गीता के इन भाषान्तरणों का एक मुख्य परिणाम भी है। वह यह कि भारतीय समाज के बारे में एक विलक्षण छवि का समर्थन करने के लिए वे उपयोगी होते हैं। उस विलक्षण छवि को समझने के लिए कुछ उदाहरण ऐसे हैं :-

- भारतीय समाज में स्त्रियों को नियंत्रण में रखने से जातिव्यवस्था की रक्षा की जाती है। यानी समाज के उच्चवर्ग के लोग अपनी शुद्धता को बनाए रखने के लिए नीचवर्ग के पुरुषों के साथ उच्चवर्ग की स्त्रियों के शारीरिक संबंध को संस्थागत रूप से नियंत्रण करते थे। जब यह नियंत्रण ढीला पड़ता है तब सामाजिक संरचना बिगड़ जाती है, ऐसा ब्राह्मणिकल टेक्स्ट (Brahmanical Text) में कहा जाता है²⁵।

²⁵ "When the structure to prevent miscegeny breaks down the Brahmanical texts consider that the whole elaborate edifice of social order that they built up has collapsed. The Kaliyuga of the future is just such a time when women of the high castes and men of the low castes will ingress from their duties. The Bhagavad Gita, the normative text par excellence of the Hindus, outlines the collapse of the social and moral order when there are leakages in the closed structure of marriages. Families are broken, rites are forgotten, women are defiled and from this corruption comes the mixing of castes [Gita I: 41-44]". Chakravarti 1993. <https://www.epw.in/journal/1993/14/special-articles/conceptualising-brahmanical-patriarchy-early-india-gender- caste. Retrieved on 17.11.2021.>

- भगवद्गीता में जातिव्यवस्था की पवित्रता की सराहना की गई है। जातियाँ न होने से लैंगिक मूल्यों से संबंधित मानवता की अत्यंत श्रेष्ठ गुणवत्ता नष्ट हो जाती है ²⁶।
- भगवद्गीता का यह श्लोक अंतर्जाती विवाह के निषेध के बारे में है। इस श्लोक के अनुसार अंतर्जाती विवाह नरकप्राप्ति का कारण बन जाता है। इसलिए मानवता को अंतर्जाती विवाह से बचाने के लिए कृष्ण ने अवतार लिया ²⁷।
- श्रेणीकृत 'हिन्दू' समाज में पुरुषप्रधान व्यवस्था थी और स्त्रियों को पुरुषों से तुच्छ माना गया था ²⁸।

इन उदाहरणों पर यदि ध्यान दे तो भारतीय समाज के बारे में एक विलक्षण छबी दिखाई देती है। वह यह कि भारतीय समाज में एक जातिव्यवस्था है। वह श्रेणीकृत है और उसमें सबकी सामाजिक स्थिति एक समान नहीं है। वह ब्राह्मणों से रचित एक व्यवस्था थी। ब्राह्मणादि उच्चवर्ग के लोगों की पवित्रता को बचा कर जातिव्यवस्था को बनाए रखने के लिए अंतर्जातीय विवाह को हर तरह से निषेध किया गया था। और इस अंतर्जातीय विवाह के निषेध से स्त्रियों को पुरुषों से तुच्छ मानकर उनके स्वतंत्रता का नियंत्रण किया गया था। इस दृश्य के प्रमाण में भगवद्गीता के “अधर्माभिभवात्” श्लोक का उल्लेख किया जाता है। (उदाहरण के लिए उपरोक्त उद्धरणों को देखें) यानी भारतीय समाज में ‘जातिव्यवस्था’ जैसे ‘समस्या’ओं के लिए भगवद्गीता भी एक कारण है अथवा यह ग्रंथ उस कालखंड की श्रेणीकृत सामाजिक व्यवस्था का समर्थन

²⁶ “The sanctity of caste is extolled too in the Bhagavad Gita, the great exposition of spiritual teaching which is contained within the ancient Mahabharata epic. Without caste, says the Gita, there would be corruption of humanity's most precious standards of domestic honour and sexual propriety.” Bayly 1999:13.

²⁷ “Jati, or caste, in both animals and humans, is assumed to be a grouping within which sexual relations and marriage can rightfully take place. Sexual relations (married or not) outside of this are illegitimate and, as we are told in the Bhagavad Gita, lead to hell. It was this destruction of the society, this intermixing of castes, which Krishna became an avatar to save humanity from, according to the Gita!” https://roundtableindia.co.in/index.php?option=com_content&view=article&id=4403:caste-in-india&catid=118:thought&Itemid=131 Retrieved on 16.11.2021.

²⁸ “It may be argued, of course, that all the major religions are fundamentally patriarchal since they came into being at historical periods distant from our own when human survival was predicated on a strict division of male and female realms. As the hero Arjuna tells the God Krishna in the Bhagavad Gita, ‘In overwhelming chaos, Krishna Women of the family are corrupted, and when women are corrupted, Disorder is born in society’.” Ruthven 2004:114.

करती है। इस तरह के वाद से यह अर्थ निकलता है कि 'हिन्दू' समाज के समस्याओं की 'नैतिक' जिम्मेदारी²⁹ भगवद्गीता के इन श्लोकों की है। इस तरह ये भाषान्तरण इस निष्कर्ष पर आने के लिए उपयोगी होते हैं कि, भारतीय समाज के इस विलक्षण दृश्य का समर्थन भगवद्गीता के ये श्लोक करते हैं। इस तरह ये भाषान्तरण भारत के इस विलक्षण छवि को दृढ़ करता है।

इसलिए भारतीय समाज के बारे में यह नवोत्पन्न छवि अगर सही है तो यह मानना पड़ेगा कि ये भाषान्तरण भी सही हैं। क्योंकि जैसे कि चर्चा की गई है, भगवद्गीता के भाषान्तरणों ने भारतीय समाज के इस विलक्षण छवि की पुष्टीकरण के लिए निश्चित रूप से मदद किए हैं। लेकिन यह छवि वास्तव में भारतीय समाज के बारे में कुछ भी नहीं कहता है। अगर कहा जाए कि यह एक विकृत निरूपण है तो इन भाषान्तरणों में समस्या होनी चाहिए। अर्थात्, इस नए निरूपण और भाषान्तरणों के बीच संबंध होने के कारण अगर कहे कि इस निरूपण में समस्या है तो भाषान्तरणों में भी समस्या होनी चाहिए और यदि भाषान्तरणों में समस्या है तो भारतीय समाज की इस नए निरूपण की वैधता प्रश्नास्पद है। तो क्या इन भाषान्तरणों में समस्या है?

३.३. भाषान्तरणों की समस्या का निरूपण

पहले यह चर्चा की गई थी कि “अधर्माभिभवात्” श्लोक को समझने के लिए दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों को समझ लेना अत्यंत आवश्यक है। भाषान्तरणों से इन दो शब्दों का मैथुन और संतति से संबंधित अर्थ मिला। लेकिन यह स्पष्ट नहीं हुआ कि इस श्लोक का यही अर्थ कैसे निकला। ऐसा कह सकते हैं कि इस श्लोक को यह अर्थ उसके शब्दों से ही मिला है। इसके लिए मूल में ही अर्थविशेष को कहनेवाला शब्द होना चाहिए। लेकिन मूलश्लोक में ऐसा कोई शब्द नहीं जिससे संतति, स्वैरिणी, मैथुन जैसे शब्दों से इस श्लोक को अर्थविशेष से समझा जाए। यह कहना संभव नहीं कि मूलश्लोक के दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों के

²⁹ “Such is the position of Geeta. What difference is there between it and the Manu Smriti? Geeta is Manu in a nutshell. Those who run away from Manu Smriti and want to take refuge in Geeta either do not know Gita or are prepared to omit from their consideration that soul of Geeta which makes it akin to Manu Smriti”. Moon 2014:81. https://www.mea.gov.in/Images/attach/amb/Volume_03.pdf Retrieved on 07.12.2021.

यही प्रमुख अर्थ हैं (यह अगले भाग में स्पष्ट होगा)। इससे यह ज्ञात होता है कि भाषान्तरण इस श्लोक को ग्रंथ में अनुपस्थित शब्दों के माध्यम से समझाते हैं।

यहाँ यह समस्या नहीं है कि मात्र ग्रंथ में अनुपस्थित शब्दों को लेकर श्लोक का अर्थ समझा जा रहा है। कई बार अर्थ को ठीक समझाने के लिए बाहर से शब्दों को लाना अनिवार्य होगा। लेकिन समस्या यह है कि श्लोक के दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों को समझाने के लिए लाए गए शब्द इस श्लोक का अर्थ निर्णय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यानी वे इस श्लोक के अर्थव्याप्ति का निश्चय करते हैं और इससे इस श्लोक को समझने के अन्य संभावनाओं को पूर्णतया खतम कर देते हैं। इस उदाहरण में दुष्टा जैसे संस्कृत शब्दों के और भी अर्थ हो सकते हैं और इनके द्वारा 'स्त्रीषु दुष्टासु' को समझाने के अनेक संभावनाएँ हो सकती हैं, लेकिन ये भाषान्तरण इन संभावनाओं को मिटा रही है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि भाषान्तरकारों को यही निर्दिष्ट अर्थविशेष क्यों सही लगा।

भाषान्तरकारों को क्यों दुष्ट जैसे शब्दों के निर्दिष्ट अर्थविशेष ही सही लगे, इसको समझाने के लिए केवल एक संभावना है। वह यह कि गीता काल के अन्य संस्कृत ग्रंथों में भी स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर को मैथुन जैसे अर्थों से ही संबंधित माना गया है। अगर यह सच है तो यह मानना पड़ेगा कि भाषान्तरण सही है और पहले चर्चा की गई भारत का विलक्षण चित्र भी सही है। लेकिन मान लें कि उस कालखंड के ग्रंथों में दुष्ट और वर्णसंकर को मैथुन जैसे अर्थों से संबंधित नहीं समझा गया है। तब यह प्रश्न उठता है कि भारत के बारे में जो विलक्षण छवि है क्या उससे ऐसे भाषान्तरण बन रहे हैं? अर्थात् यह कहना होगा कि भारत की यह छवि भाषान्तरित ग्रंथ से नहीं बन रही है, बल्कि यह विलक्षण छवि इन भाषान्तरणों की सृष्टि कर रही है। इसको परखने से पहले ये देखें कि जब दुष्ट शब्द स्त्रियों पर प्रयोग किया जाता है तब क्या वह लैंगिकता से संबंधित है, और क्या हमारे ग्रंथ यह विचार करते हैं कि स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से संबंधित है।

४. दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों के निर्दिष्ट अर्थविशेष क्या महाभारत इत्यादि से मिलते हैं?

यह कहना भी ठीक नहीं कि संस्कृत के प्राचीन प्रयोगों में जब दुष्ट शब्द स्त्रियों पर प्रयोग किया गया तब वह मैथुन से ही संबंधित हैं। उदाहरण के लिए, रामायण में जब कैकेयी कहती है कि भरत को राजा बनना चाहिए तब दशरथ उसको “दुष्टचारित्र”³⁰ शब्द से संबोधित करता है। तो वहाँ के श्लोकों में इस शब्द को ‘कैकेयी ने परपुरुषों से शारीरिक संबंध रखा हुआ है’ इस अर्थ में प्रयोग नहीं किया गया है। और यदि यह कहना है कि दुष्ट शब्द मैथुन से संबंधित है तो भाषान्तरकारों को यह ठीक नहीं लगता है कि अपने पति से मैथुन करने से वह दुष्ट हो जाती है। इसलिए अगर मैथुन के संबंध में स्त्रियों को दुष्ट कहना होगा तो उसे समझने के लिए दो संभावनाएँ हैं। एक यह है कि अविवाहित स्त्री अगर किसी पुरुष से संबंध बना लेती है तो वह दुष्ट हो जाती है। दूसरा यह है कि विवाहित स्त्री अपने पति के अलावा किसी पुरुष से संबंध बना लेती है तो वह दुष्ट हो जाती है। तो भारतीय परंपरा में यदि अविवाहित या विवाहित स्त्री जब पुरुष/परपुरुष से संबंध बना लेती हैं क्या तब वह दुष्ट कहलाती हैं? इस पर विचार करेंगे।

४.१. क्या कुंती और शर्मिष्ठा दुष्ट हैं?

पहला प्रश्न यह है कि अविवाहित स्त्री जब किसी पुरुष से संबंध बना लेती हैं तो क्या वह दुष्ट कहलाती हैं। महाभारत में, जिसमें भगवद्गीता पाई जाती है, कहीं पर भी इस संदर्भ में स्त्री को दुष्ट नहीं कहा गया है। उदाहरण के लिए, सत्यवती अविवाहित होकर भी पराशर से संबंध बनाकर व्यास को जन्म देती है। लेकिन महाभारत में उसे दुष्ट नहीं कहा गया है। उसी तरह कुंती भी विवाह से पहले ही कर्ण को जन्म देती है। और वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा भी ययाति से बिना विवाह के ही पुरू जैसे संतान को जन्म देती है और आगे जाकर पुरू ही राजा बनता है। लेकिन महाभारत में इन स्त्रियों को कहीं पर भी दुष्ट नहीं कहा गया है। इस तरह महाभारत के उपाख्यानों में देख सकते हैं कि अविवाहित स्त्री किसी पुरुष से संबंध बनाने के कारण दुष्ट नहीं कहलाती है।

³⁰ नृशंसे दुष्टचारित्रे कुलस्यास्य विनाशिनी। किं कृतं तव रामेण पापे पापं मयापि वा ॥ बालकाण्डम् १०/३३ ॥

और यदि यह कहा जाता है कि अनेक पुरुषों से मैथुन करने के कारण स्त्रियाँ दुष्ट हो जाती है तो भारतीय परंपरा में वेश्याओं को नित्यसुमंगली क्यों कहा जाता है? भारतीय परंपरा में 'सुमंगली' एक अत्यंत गौरवपूर्ण शब्द है। वेश्याएँ जिनके लिए पुरुषसंबंध ही प्रधान है वे कैसे नित्यसुमंगली हो सकती हैं? और स्वर्ग की वेश्या (अप्सरा) मेनका को दुष्यंत ने अप्सराओं में श्रेष्ठा³¹ कहा है। देवताओं और मानवों के साथ संबंध बनाने वाली 'दुष्ट' मेनका श्रेष्ठा कैसे हो सकती है? एक ही स्त्री दुष्ट और श्रेष्ठ दोनों कैसे हो सकती है? ऐसा कह सकते हैं कि पहले दुष्ट होकर बाद में बदलाव आने के कारण श्रेष्ठ बनी है। लेकिन महाभारत में मेनका ने परपुरुष संबंध को छोड़ देने के कारण श्रेष्ठ शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। इसलिए विवाह के बिना पुरुष के साथ संबंध रखना या अनेक पुरुषों से मैथुन करने के कारण स्त्री को दुष्ट कहना सही नहीं बैठता है।

४.२. परपुरुषमैथुन से क्या स्त्री दुष्ट बनती है?

और अगर यह कहा जाता है कि विवाहित स्त्री परपुरुष से मैथुन करने के कारण दुष्ट होती है तो कुंती अपने पति से संतान न पाने के कारण यमराज आदि देवताओं से संतान प्राप्त करती है, लेकिन कुंती को महाभारत में कभी दुष्ट नहीं कहा गया है। कुंती के इस उदाहरण में यमराज आदि देवताएँ हैं। उनके वरदान से संतान प्राप्त की है न कि शारीरिक संबंध से। इसलिए कुंती दुष्ट नहीं है, अगर इस तरह बहस किया जाये तो अंबिका और अंबालिका ने परपुरुष व्यास के साथ संबंध बनाकर पांडु और धृतराष्ट्र को जन्म दिया है। तो क्या अंबिका और अंबालिका दुष्ट हैं? अगर हैं तो "प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः" ऐसा कहने वाला अर्जुन के पिता पांडु भी वर्णसंकर का ही उत्पन्न है न?³² और महाभारत के एक कथा के अनुसार परशुराम जी इस संसार को क्षत्रिय रहित बनाने की प्रतिज्ञा करके हज़ारों क्षत्रियों का संहार करते हैं। इस तरह अपने पतियों को खोई हुई हज़ारों क्षत्रिय स्त्रियों ने ब्राह्मण पुरुषों के साथ संबंध बनाकर संतान की

³¹ मेनकाप्सरसां श्रेष्ठा महर्षीणां च ते पिता । तयोरपत्यं कस्मात्त्वं पुंश्चलीवाभिधास्यसि ॥ अश्रद्धेयमिदं वाक्यं कथयन्ती न लज्जसे । विशेषतो मत्सकाशे दुष्टतापसी गम्यताम् ॥ म.भा. आदिपर्व ७४/७६ – ७७

³² अंबिका और अंबालिका व्यास के साथ गमन करने से पांडु और धृतराष्ट्र जन्म लेते हैं ।

प्राप्ति की। इससे फिर क्षत्रिय संतति बढ़ी³³। तो क्या ये हज़ारों क्षत्रिय स्त्रियाँ दुष्ट हैं? महाभारत में इन संदर्भों में कहीं पर भी स्त्रियों को दुष्ट नहीं कहा गया है। तो उसी महाभारत के “अधर्माभिभवात्” श्लोक के दुष्ट शब्द का अर्थ विवाहित स्त्री के परपुरुषगमन से संबंधित है, ऐसे कैसे बहस किया जा सकता है?

४.३. उचित कारण के रहते एक विवाहित स्त्री के साथ गमन

और कामसूत्रों³⁴ में मैथुन की चर्चा के संदर्भ में ग्रंथकार कहते हैं कि सवर्णस्त्रियों से मैथुन करना श्रेष्ठ³⁵ है और उत्तमवर्ण की स्त्रियों से या किसी और से प्राप्त स्त्रियों से मैथुन करना निषिद्ध है। और आगे यह कहते हैं कि दूसरी बार विवाहित स्त्री, वेश्या जैसों के साथ मैथुन करना निषिद्ध भी नहीं है और विहित भी नहीं है। बाद में, यह भी कहते हैं कि कन्या, पुनर्विवाहित स्त्री और वेश्या इन तीनों स्त्रियों से मैथुन कर सकते हैं³⁶ और उचित कारण के रहते विवाहित स्त्रियों से भी मैथुन कर सकते हैं³⁷। इसके बाद, अनेक कारण दिए गए हैं जिनके रहते परस्त्रीगमन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, संपत्ति पाने की संभावना हो या जब स्त्री मैथुन करने की इच्छा प्रकट करे तो उसे इनकार करने से यदि स्वयं को उससे समस्या हो तो मैथुन करना है। इस तरह कहा गया है कि योग्य कारण के रहते विवाहित स्त्री से भी संभोग कर सकते हैं। यानी जब एक पुरुष योग्य कारण के रहते विवाहित परस्त्री में गमन कर सकता है तो यह कह नहीं सकते कि एक विवाहित स्त्री के लिए परपुरुष में समागम करना निषिद्ध है। इसलिए मैथुन जैसे विषयों पर विचार

³³ तदा निःक्षत्रिये लोके भार्गवेण कृते सति । ब्राह्मणान्क्षत्रिया राजन्युत्रार्थिन्योऽभिचक्रमुः ॥ १/६४/५, तेभ्यस्तु लेभिरे गर्भान्क्षत्रियास्ताः सहस्रशः। ततः सुपुत्रिरे राजन्क्षत्रियान्वीर्यसंमतान्॥ म.भा. आदिपर्व ६४/७

³⁴ कुलमिलाकर इस लेख के संदर्भ में हुई चर्चाओं से यह अर्थ निकालने की संभावना है कि भारतीय परंपरा में मैथुनादि को कोई बाध्यताएं न होकर स्वेच्छा से जीना है। लेकिन इस तरह की व्याख्या करना हमारा इरादा नहीं है । और हम यह भी चर्चा नहीं कर रहे हैं कि भारतीय लोग स्त्रीपुरुष के संबंधों को कैसे निभाते हैं । इस लेख का मुद्दा यह है कि – जब स्त्री को दुष्ट कहते हैं तो उस स्त्रीलिंग के प्रयोग से उत्पन्न अर्थविशेष हमारे ग्रंथों के संबंध में अनुचित है । यहां गौरतलब की बात है कि यूरोपीयनों के normative ethics से विभिन्न आचार-विचार और क्रियाकेंद्रित नैतिक जगत का स्वरूप और उसमें स्त्रीपुरुषों के संबंध के बारे में नैतिक दृष्टिकोण निश्चय कर लेना इन सब विषयों को अलग से और विस्तार से चर्चा करना होगा। यह विषय इस लेख के दायरे से बाहर है। इस लेख का मुद्दा बस इतना ही है कि दुष्ट शब्द को परपुरुषमैथुन जैसे अर्थ निकालने से होने वाली समस्या को दिखाना है ।

³⁵ कामश्चतुर्षु वर्णेषु सवर्णतः शास्त्रतश्च अन्यपूर्वायां प्रयुज्यमानः पुत्रीयो यशस्यो लौकिकश्च भवति। तद्विपरीत उत्तमवर्णासु परपरिगृहीतासु च प्रतिषिद्धः । कामसूत्र १/५/१ – २

³⁶ अवरवर्णास्वरवसितासु वेश्यासु पुनर्भूषु च न शिष्टो न प्रतिषिद्धः सुखार्थत्वात् । तत्र नायिकास्तिस्रः कन्या पुनर्भूवैश्या च इति । कामसूत्र १/५/३ – ४

³⁷ अन्यकारणवशात्परिगृहीतापि पाक्षिकी चतुर्थीति गोणिकापुत्रः । कामसूत्र १/५/५

करने वाले कामशास्त्र के आधार पर भी यह कहना कठिन है कि परपुरुष के संभोग के कारण स्त्री दुष्ट हो जाती है।

४.४. स्त्रियाँ सदा दुष्ट नहीं रहती हैं

वासिष्ठ धर्मसूत्र में कहा गया है कि स्त्रियाँ अत्यंत पवित्र होती हैं। ऋतुकाल में वे शुद्ध हो जाती हैं। इसलिए वे सदा के लिए दूषित नहीं रहती हैं। इन वाक्यों का अर्थ कुछ इस तरह है :- “एक स्त्री प्रेमी के कारण दूषित नहीं हो जाती। एक ब्राह्मण वेदकर्मों से दूषित नहीं हो जाता। पानी मूत्रपुरीषों से दूषित नहीं होता। आग जलने से दूषित नहीं होता। एक दूषित स्त्री चाहे स्वयं शंकास्पद हो या निष्कासित की गई हो या बलात्कार से संभोग की गई हो या चोर के हाथ में पकड़ी गई हो वह इनकार करने योग्य नहीं है। उसको त्याग करना विहित नहीं है। ऋतुकाल तक प्रतीक्षा करना है। उससे वह शुद्ध हो जाती है। स्त्रियाँ अत्यंत पवित्र होती हैं। वे सदैव दूषित नहीं रहती हैं। प्रतिमाह उनके रजस् उनके दुष्कर्मों को हटा देता है”³⁸। इसलिए भाषान्तरकारों के अनुसार यदि मान ले कि एक स्त्री परपुरुष के संभोग के कारण दुष्ट हो जाती है, लेकिन ऋतुकाल में फिर से शुद्ध हो जाने के कारण स्त्रियों को दुष्ट नहीं कह सकते हैं।

४.५. स्त्रियों का ‘नीति’भ्रष्ट हो जाना !

और कुछ अनुवादक कहते हैं कि स्त्रियों का दुष्ट होना यानी ‘नैतिक स्तर पर भ्रष्ट’ होना है। (स्वामी प्रभुपाद के कन्नड़ भाषान्तर को देख सकते हैं) और उन भाषान्तरणों से यह भी समझ आता है कि यह नैतिक भ्रष्टता संभोग से ही संबंधित है। अगर यह समझना है कि इनकी नैतिक भ्रष्टता के कारण वर्णसंकर होता है तो यह कहना पड़ेगा कि एक विवाहित स्त्री जब भ्रष्ट होती है तब वह अन्य पुरुषों से संभोग कर लेती है क्योंकि एक विवाहित स्त्री का केवल अपने पति का साथ शारीरिक संबंध रखना ‘नीति’ है। लेकिन जैसे कि पहले चर्चा की गई, महाभारत के उदाहरणों से या कामशास्त्र के विचारों में कहीं पर भी ऐसा

³⁸ न स्त्री दुष्यति जारेण न विप्रो वेदकर्मणा । नापो मूत्रपुरीषेण नाग्निर्दहनकर्मणा ॥ स्वयं विप्रतिपन्ना वा यदि वा विप्रवासिता । बलात्कारोपभुक्ता वा चोरहस्तगतापि वा ॥ न त्याज्या दूषिता नारी नास्यास्त्यागो विधीयते । पुष्पकालमुपासीत ऋतुकालेन शुद्ध्यति ॥ स्त्रियं पवित्रमतुलं नैता दुष्यन्ति कर्हिचित् । मासि मासि रजो ह्यासां दुष्कृतान्यपकर्षति ॥ वासिष्ठधर्मसूत्र २८/१ - ४

‘नीति’ दिखाई नहीं दिया कि एक विवाहित स्त्री केवल अपने पति के साथ ही संगम कर सकती है। वहाँ की चर्चाओं से या उदाहरणों से यह अर्थ निकलता है कि परपुरुषगमन के लिए उचित कारण होना चाहिए। इसलिए यह स्पष्ट नहीं होता है कि जब स्त्री ‘नीतिभ्रष्ट’ हो तब वर्णसंकर या संभोग होने का अर्थ क्या है।

इसलिए महाभारत जैसे ग्रंथों में संभोग के कारण स्त्रियों को दुष्ट कहना दिखाई नहीं देता। जैसे चर्चा की गई अगर यह सच ठहरा तो यह कहना संभव नहीं कि मैथुन जैसे शब्दों का अर्थ निर्णय करने के लिए भगवद्गीता या संस्कृत के ग्रंथों से आवश्यक साधन मिल रही है। अगर ऐसा है तो यह भी कहना होगा कि दुष्ट शब्द का अर्थ कहीं ओर से आ रहा है। अगर यह सच है तो इस पर विचार करना पड़ेगा कि भारत के बारे में यूरोपीय लोगों ने जो छवि निरूपित किए हैं, कहीं ये अनुवादक उनका पुनरुत्पन्न तो नहीं कर रहे हैं। लेकिन इस पर विचार करने से पहले वर्णसंकर शब्द के अर्थ पर ध्यान देंगे।

४.६. क्या वर्णसंकर संभोग या संतति से संबंधित है?

अब तक की चर्चा से यह संभावना नहीं दिखी कि विवाह के बिना पुरुष से शारीरिक संबंध रखने से या अनेक पुरुषों से शारीरिक संबंध रखने से या एक विवाहित स्त्री परपुरुष से संबंध रखने के कारण उसे दुष्ट कह सकते हैं। लेकिन अनुवादकों को सही ठहराने के लिए ऐसा भी कह सकते हैं कि इस श्लोक में वर्णसंकर शब्द है और वह शब्द संतति से संबंधित होने के कारण स्त्री का दुष्ट होना संभोग से ही संबंधित है। या जैसे कि कुछ कहते हैं कि वर्णसंकर शब्द मैथुन से ही संबंधित है। तो वर्णसंकर शब्द का क्या मैथुन या संतति का अर्थ है?

इस श्लोक में ऐसा कोई शब्द नहीं जिससे यह कह सके कि वर्णसंकर संतति या मैथुन से ही संबंधित है। और मात्र वर्णसंकर शब्द की व्युत्पत्ति से संतति या मैथुन अर्थ निकालना संभव नहीं। विभिन्न वर्णों का मिलन, इस शब्द से बस यही अर्थ निकलता है। यहां वर्णसंकर शब्द को “वर्णानां सङ्कर” कह सकते हैं। वर्ण शब्द का अर्थ है कम से कम एक वर्ग या समूह। संकर शब्द “सं” उपसर्ग से युक्त “कृ विक्षेपे” धातु से उत्पन्न है। इस धातु का अर्थ है फेंकना। “सं” उपसर्ग सम्मुख अर्थ में है। इसलिए “संकर”

शब्द का अर्थ है सम्मुख फेंकना। किसी एक वस्तु को अगर किसी दूसरे वस्तु के सम्मुख फेंका जाए तो कहीं पर वे दोनों वस्तु मिलने के कारण “विभिन्न वस्तुओं का मिलन” इस अर्थ में “संकर”³⁹ शब्द प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, न्यायशास्त्र में दो परस्पर विभिन्न धर्मों का एक जगह में मिल जाने को संकर⁴⁰ कहते हैं। इसलिए जब यह समझ आएगा कि संकर शब्द का अर्थ विभिन्न पदार्थों का एकत्र मिलन है तब इसी व्युत्पत्ति से वर्णसंकर को विभिन्न वर्णों का मिलन कह सकते हैं। इसलिए सीधे तौर पर यह नहीं कह सकते हैं कि वर्णसंकर शब्द का अर्थ मैथुन या संतति है। अगर यह अर्थ संभव नहीं होगा तो वर्णसंकर शब्द के प्रयोग से यह नहीं कह सकते हैं कि स्त्रियों का दुष्ट होना संभोग से संबंधित है।

वर्णसंकर शब्द के व्युत्पत्ति से स्पष्टरूप से संतति या मैथुन अर्थ नहीं मिलता है, फिर भी ऐसा कह सकते हैं कि धर्मशास्त्र और महाभारत में यह शब्द संतति या मैथुन अर्थ में ही प्रयुक्त है इसलिए यहाँ भी उसी अर्थ में स्वीकार करना होगा। लेकिन धर्मशास्त्र या महाभारत के प्रयोगों के आधार पर वर्णसंकर शब्द को संतति या मैथुन अर्थ नहीं लगा सकते हैं इस विषय पर कुछ ही समय में प्रकाशित होने वाले हमारे एक पुस्तक में विचार किया गया है⁴¹। इसलिए इस चर्चा को यहाँ विस्तार नहीं करेंगे। और ऐसा भी कह सकते हैं कि मनुस्मृति के व्याख्याकारों ने वर्णसंकर शब्द का संतति या मैथुन अर्थ ही बताए हैं, लेकिन वर्णसंकर शब्द का प्रत्यक्ष अर्थ संतति इत्यादि न होने के कारण यह प्रश्न उठता है कि उन व्याख्याकारों ने इस तरह के अर्थ कैसे बताए हैं।

कुलमिलाकर इस चर्चा से यह पता चलता है कि वर्णसंकर शब्द का संतति या मैथुन अर्थ हो या स्त्रियों का दुष्ट होना याने ‘नीतिभ्रष्ट’ होना या परपुरुष से संभोग करने जैसा अर्थ, उस कालखंड के संस्कृत ग्रंथों से नहीं मिल सकता है। लेकिन इस श्लोक का यही अर्थ प्रमुख होने का कारण क्या है?

³⁹ धातु से ‘फेंकने’ का अर्थ प्राप्त होने के कारण, उस अर्थ के संबंध में भी संकर शब्द प्रयोग में है। उदाहरण के लिए जो फेंका जाता है उसे संकर कहा जाता है। चाहे कचरा ही फेंका जाए उसे भी संकर शब्द प्रयोग करते हैं। उदा:- जागर्त्येव हि दुष्टात्मा सङ्करेऽग्निरिवोत्थितः । म.भा. शान्तिपर्व १०३/१२ । अर्थात् कचरे में आग जैसा ।

⁴⁰ परस्परात्यन्ताभावसमानाधिकरणयोः धर्मयोः एकत्र समावेशः । कणादसूत्रविवृतिः १/२/३

⁴¹ फिलहाल अप्रकाशित इस पुस्तक में वर्णसंकर से संबंधित महाभारत, मनुस्मृति और धर्मसूत्रों के सभी उल्लेख पर चर्चा की गई है।

५. भाषान्तर के अर्थ को मानने से होने वाली समस्या

गीता के श्लोक के शब्दों से या महाभारत जैसे ग्रंथों से भी यह निर्णय नहीं कर सके कि स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर शब्द का अर्थ संभोग या संतति से कैसे संबंधित है। लेकिन मैथुन जैसे अर्थ को मान लेने से अगर “अधर्माभिभवात्” श्लोक से संबंधित अन्य श्लोक समझ आते हैं तो कह सकते हैं कि मैथुन जैसे अर्थों को मान लेना सही है। लेकिन अगर ये भाषान्तर वहाँ भी समस्याएँ खड़े कर लेती है तो यह प्रश्न वैसे ही रह जाएगा कि भाषान्तरणों ने यह कैसे निश्चित कर लिया कि मैथुन जैसे शब्द ही सटीक है। इसलिए अब हम देखेंगे कि भाषान्तरणों ने जो अर्थ मान लिए हैं वह अर्थ वर्णसंकर से संबंधित दूसरा श्लोक और “अधर्माभिभवात्” श्लोक के पिछले और अगले श्लोकों को समझाने में कितने उपयोगी हैं।

५.१. कृष्ण का वचन और भाषान्तरणों की असंगति

इस दृष्टि से अगर देखे तो यह दिखाई देगा कि भगवद्गीता के तीसरा अध्याय में जो वर्णसंकर से संबंधित श्लोक है उसे समझने में ये भाषान्तरण बाधा बन रहे हैं। तीसरे अध्याय में कृष्ण कहते हैं:-

उत्सीदेयुरिमे लोकाः न कुर्यां कर्म चेदहम्।

सङ्करस्य च कर्ता स्याम् उपहन्याम् इमाः प्रजाः॥ ३/२४

अगर मैं कर्म न करू तो ये सारे लोक नष्ट हो जाएंगे। मैं संकर⁴² का कर्ता बन जाता हूँ और इससे प्रजा का नाश का कारण बन जाता हूँ।

यहाँ कृष्ण कह रहे हैं कि अगर वह कर्म नहीं करेंगे तो वर्णसंकर हो जाता है। जैसे कि हमने भाषान्तरणों में देखा है वर्णसंकर और मैथुन में संबंध है तो फिर कृष्ण जो कह रहा है कि उनका कर्म न करने से वर्णसंकर हो जाएगा, उसका अर्थ क्या है? क्या ऐसा है कि कृष्ण का अपनी पत्नी से संभोग करना उसका ‘कर्म’ है और वह न करने से वर्णसंकर हो जाता है? अगर इसे मान जाए तो कृष्ण की कथा को,

⁴² यद्यपि यहां संकर शब्द प्रयोग किया गया है वर्णसंकर के सिवाय और कोई संकर युक्त नहीं लगता ।

जहाँ वह अनेक कारणों से उससे रक्षित स्त्रियों को पत्नी बना लेता था, उसको इस तरह समझ लेना चाहिए कि वह ये सब 'वर्णसंकर' न हो इसलिए कर रहा था। या ऐसा कहा जाए कि वर्णसंकर स्त्रियों का परपुरुषों से संभोग करने से होता है न कि पुरुष के परस्त्री गमन करने से तो इस श्लोक को इस तरह समझना होगा कि – स्त्रियों को अपने-अपने पुरुषों से ही संभोग करवाना या नैतिक स्तर पर सही रहने जैसा करवाना कृष्ण का 'कर्म' है। अगर कृष्ण ने अपने इस कर्म को नहीं किया तो स्त्रियाँ परपुरुषों से संभोग करना शुरू कर देती हैं। अगर इस व्याख्या को मान ले तो यह अर्थ निकलता है कि स्त्रियाँ सदैव परपुरुषों से संभोग करने के लिए तत्पर रहती है और कृष्ण उन सबका नियंत्रण करता रहता है। लेकिन कृष्ण की कथा से तो ऐसा कह नहीं सकते कि परपुरुषासक्त स्त्रियों का नियंत्रण करना ही उसका कर्म है। इसलिए इन भाषान्तरणों को अगर सही मान लिया तो यह स्पष्ट नहीं होगा कि कृष्ण के कर्म न करने से वर्णसंकर होने का मतलब क्या है।

५.२. वर्तमान भाषान्तरण और पूर्वोत्तर की असंगति

और भगवद्गीता कारणों की सूची देती है कि कब स्त्रियाँ दुष्ट हो जाती हैं। कुल का नाश होने से सनातन कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं। और कुलधर्मों का नाश होने से समस्त कुलों में अधर्म बढ़ जाता है। अधर्म के बढ़ जाने से कुल की स्त्रियाँ दूषित हो जाती हैं। और जब स्त्रियाँ दुष्ट हो जाती हैं तब वर्णसंकर होता है। यानी अगर स्त्रियों को दुष्ट होना है तो सनातन कुलधर्मों का नाश होना आवश्यक है। परिणामवश समस्त कुलों में अधर्म बढ़ जाता है। कुलों में अधर्म के बढ़ने से स्त्रियाँ दुष्ट हो जाती हैं। इससे वर्णसंकर होता है। (१.२.१ को देखें) वहाँ कहा गया है कि जातिधर्म और कुलधर्मों के नाश के लिए वर्णसंकर कारण बनता है। इन वाक्यों से यह समझ आता है कि स्त्रियों का दुष्ट होना किसी समाज के एक महत्वपूर्ण घटना से संबंधित है न कि केवल कुछ स्त्रियों के परपुरुषों के साथ संगम से संबंधित।

उतना ही नहीं अगले कुछ श्लोक वर्णसंकर के परिणामों पर विचार करते हैं। कहा गया है कि वर्णसंकर होने से जाति और कुलधर्मों का नाश होता है। क्या कुछ स्त्रियों के परपुरुषों से शारीरिक संबंध बनाने से जाति और कुलधर्मों का नाश हो सकता है? अगर यह सच है तो महाभारत जैसे ग्रंथों में नियोग

(कृत्रिम मातृभाव/सरोगसि [surrogacy]) को क्यों मान लिया गया है? नियोग से संबंधित कथाओं में कुछ उल्लेख मिलते हैं कि वंश को आगे बढ़ाने के लिए संतान के न रहने के कारण नियोग बने है। इस तरह संतान के हेतु अगर परपुरुष से संभोग किया गया हो तो यह कहना होगा कि 'वर्णसंकर' से जाति और कुलधर्मों की रक्षा होती है जो अनुवादकों के कहने का विपरीत है। या इन भाषान्तरणों को सही ठहराने के लिए कुछ इस तरह व्याख्या करना होगा कि नियोग के अलावा परपुरुष से मैथुन करने से वर्णसंकर होता है, जिससे जाति और कुलधर्मों का नाश होता है। लेकिन इस तरह की व्याख्या को सिद्ध करने के लिए इस श्लोक में रहित अनेक शब्दों को लाकर समझाना होगा। इसलिए अगर इन भाषान्तरणों को सही माने तो यह स्पष्ट नहीं होगा कि कैसे स्त्रियों के दुष्ट हो जाने से वर्णसंकर होकर जाति और कुलधर्मों का नाश होता है। या स्त्रियों के अन्य जाति के पुरुषों से पाया हुआ संतान उस स्त्री के कुल या जाति के धर्मों का अनुसरण करने के बजाय पिता के जाति या कुल के धर्म का अनुसरण करे, या यह भी हो सकता है कि माता-पिता के अलग-अलग जाति या कुलधर्म होने के कारण किसी एक जाति या कुल का धर्म को ठीक से अनुसरण ना कर पाए। इसलिए जातिधर्म या कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं। इसलिए कुछ लोग कह सकते हैं कि यह विवाह के निषेध (एन्डोगमि endogamy) से संबंधित चर्चा है। लेकिन इस श्लोक में तो कहा गया है कि स्त्रियों के दुष्ट होने से वर्णसंकर होता है और वर्णसंकर के कारण जातिधर्म और कुलधर्मों का नाश होता है। अगर यह एन्डोगमि (endogamy) से संबंधित चर्चा है तो यह कहना सही रहेगा कि स्त्रियों का दूसरे वर्ण के पुरुष के साथ संभोग करने से वर्णधर्म नष्ट होता है। अथवा अगर ऐसा कहा होता कि स्त्रियों के दुष्ट हो जाने से संकरजातियाँ उत्पन्न होती हैं, तो यह अर्थपूर्ण होता। लेकिन यहाँ इन दोनों के बदले वर्ण को जाति और कुल से अलग बताकर कहा गया है कि वर्णसंकर से जातिधर्म और कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं। इसलिए यह एन्डोगमि (endogamy) की चर्चा नहीं हो सकती।

और भगवद्गीता के इन श्लोकों में कहा गया है कि वर्णसंकर हो जाने के कारण जातिधर्म नष्ट हो जाते हैं। भाषान्तरणों में वर्ण और जाति के बीच कोई अंतर नहीं दिखाई देता है। हम देख सकते हैं कि कन्नड़ में वर्णसंकर को जातियों का मिलावट कहा गया है। लेकिन गीता में वर्ण, जाति और कुल के बीच स्पष्ट अंतर बताया गया है।

और अगले श्लोक में कहा गया है कि संकर से कुलनाशक और कुल को नरक प्राप्त होता है। वहाँ यह कहा नहीं गया कि स्त्रियों को नरक प्राप्त होगा। यानी वर्णसंकर के लिए स्त्रियों के बदले कुल के नाशकों को 'नैतिक' स्तर पर ज़िम्मेदार ठहराया है। यह कहा गया है कि जब कुल क्षीण हो जाता है तब स्त्रियाँ दुष्ट हो जाती हैं लेकिन कहीं पर भी यह विचार नहीं किया गया कि स्त्रियाँ कुल के नाशक हैं। लेकिन जब भाषान्तरणों को देखेंगे तो वे वर्णसंकर के लिए स्त्रियों को ही 'नैतिक' स्तर पर ज़िम्मेदार ठहराते हैं जो गीता ने नहीं किया है।

६. यूरोपीयन लोगों के भाषान्तरण और मैथुन जैसे शब्दों का स्पष्टार्थ

इसी तरह इस श्लोक के लगभग गत दो सदी के भाषान्तरणों को अगर गंभीरता से देखेंगे तो उन सब में यह विचार किया गया है कि स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से ही संबंधित है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता है कि ये भाषान्तरणों ने यह कैसे निर्णय कर लिया कि स्त्रियों का दुष्ट होना केवल मैथुन से ही संबंधित है जबकि स्त्रियों को दुष्ट कहने के लिए अनेक कारण हो सकते हैं। और अब तक की चर्चा से और महाभारत आदि में उल्लिखित विषयों से यह भी निश्चय नहीं कर सके कि स्त्रियों का दुष्ट होना केवल मैथुन से संबंधित विषय है। उतना ही नहीं हमने यह भी देख लिया कि इस श्लोक को मैथुन से संबंधित समझने के कारण इसके आगे पीछे के श्लोकों को और वर्णसंकर से संबंधित श्लोक को समझने में उलझने होती हैं। लेकिन भाषान्तरणों में इन सब उलझनों को नज़र अंदाज़ करके मैथुन अर्थ को ही सही मान लिया गया है। इस तरह गीता के इस श्लोक को विशिष्ट अर्थ लगाकर उसी को बीते दो सदियों से सही मान लिया गया है। लेकिन यही अर्थ सही मानने के लिए कोई पूरक साक्ष्य न होने पर भी पश्चिमियों के भाषान्तरणों को अनुसरण करके इस श्लोक को एक समान समझा गया है। इसीलिए अनेक भाषान्तरणों के रहते हुए भी इस श्लोक का स्पष्टार्थ नहीं जान सके हैं और उपरोक्त इन समस्याओं के समाधान भी नहीं हो रहे हैं। यानी एक प्रश्न का उत्तर पाने की संभावना दिख रही है कि इस श्लोक के दुष्टा जैसे शब्दों का अर्थविशेष ही क्यों उचित लगा। अर्थात् पश्चिमी लोगों को भारतीय संस्कृति के बारे में एक विलक्षण कल्पना थी। और उसी

कल्पना की तहत स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर को विशिष्ट तरह से समझे हैं। इसलिए उनके भाषान्तरण और उनपर आधारित अभिनव व्याख्याएँ (३.२.में विचार किया है) एक दूसरे की पुष्टि करते हैं।

यहाँ हमें यह समझना है कि यूरोपीयन लोगों की भारतीय समाज के बारे में समझाने का सदियों के प्रयास के फलस्वरूप आज दुष्ट और वर्णसंकर शब्दों पर एक विशेष अर्थ का आरोपण कर सके हैं। अगर यह अर्थ यूरोपीयन भाषान्तरण प्रक्रिया से स्थिर हुआ है तो यह दिखाना होगा कि यूरोपीयन भाषान्तरण के पहले की भारतीय व्याख्याएँ उन्हें पूरक नहीं थी। यूरोपीयन लोगों की भारतीय समाज से संबंधित अनुभूति को एक विशेष स्वरूप बनने में उनके बरसों तक के विचार-विमर्श कारण बने हैं और यूरोपीयन लोगों की भारतीय अनुभूति को विशेष स्वरूप देने की प्रक्रिया जटिल है। हमारे इस चर्चा में यह विचार करेंगे कि किस तरह उन्होंने अपने अनुभवों को व्यवस्थित किया और वे उपरोक्त विशिष्टार्थ के भाषान्तरणों पर कैसे पहुंचे। इसके लिए हम विल्सन की संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश और उसके शिष्य मोनियर विलियम्स की प्रसिद्ध संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश पर ध्यान देंगे।

६.१. पहले की संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश – कौन दुष्ट है?

१८१९ में एच्. एच्. विल्सन द्वारा लिखी गई शब्दकोश पहला संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश है⁴³ और बाद में मोनियर विलियम्स के द्वारा रचित संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश अत्यंत प्रसिद्ध है और उसे १८७२ में पहली बार प्रकाशित किया गया। यह शब्दकोश आज भी संस्कृत शब्दों के अर्थ को अंग्रेज़ी में जानने के लिए उपयोग किया जाता है। इन दोनों शब्दकोश ने दुष्ट शब्द का अर्थ इस तरह बताया है⁴⁴ :-

Wilson:⁴⁵

⁴³ “Wilson’s 1819 Sanskrit-English dictionary, for example, the first dictionary of its kind, had been enlarged from a compilation made by a number of Pandits employed in the Company’s college at Fort William in Calcutta and overseen by Raghupati Bhattacharya”. Dodson 2010:40.

⁴⁴ <https://www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/scans/MWScan/2020/web/webtc2/index.php> Retrieved on 19.11.2021.

⁴⁵ https://archive.org/details/sanskritenglishdictionaryhoracehaymanwilson1819_456_T/page/411/mode/2up?view=theater Retrieved on 19.11.2021.

दुष्ट mfn. Low, vile. Weak, impotent. *Vis.* wicked, depraved. f. (-ष्टा) A harlot, a wanton.

M.M. Williams:

दुष्ट mfn. spoilt, corrupted; defective, faulty; wrong, false; bad, wicked; malignant, offensive, inimical; guilty, culpable, ŚrS.; Mn.; Yājñ.; Suśr.; MBh. &c. sinning through or defiled with (cf. कर्म-, मनो-, योनि-, वाग्-); दष्ट m. a villain, rogue; a kind of noxious animal, Viṣṇ. xii, 2; दुष्टा f. a bad or unchaste woman, L. दष्ट n. sin, offence, crime, guilt, Hariv. ; R. (cf. श्रुति-); दुष्ट—गज m. a vicious elephant, MW. दुष्ट—चरित्र mfn. ill- conducted, evil-doer, Pañc. i, 215/216.

यहाँ विल्सन ने स्त्रीलिंग में दुष्ट शब्द का अर्थ एक समान बताया है। उसके लिए दो शब्दों (ए हार्लट A harlot⁴⁶, ए वान्टन a wanton⁴⁷) का प्रयोग किया गया है और वे दोनों शब्द परपुरुषसंभोग से ही संबंधित हैं। यानी विल्सन के अनुसार जब दुष्ट शब्द को स्त्रीलिंग में प्रयोग किया जाता है तब वह केवल परपुरुषमैथुन से संबंधित अर्थ ही देता है। लेकिन विल्सन की अपेक्षा मोनियर विलियम्स ने दुष्टा शब्द का अर्थ बताते समय थोड़ी सावधानी बरती है। दुष्ट शब्द को स्त्रीलिंग⁴⁸ में प्रयोग करते समय a bad or unchaste woman जैसे दो अर्थ बताकर एक और बात कहता है – A word or meaning which although given in native lexicons, has not yet been met with in any published text ⁴⁹। यानी दुष्टा शब्द का उपरोक्त अर्थ होने के बावजूद भी अब (तब) तक की किसी प्रकाशित देशी पुस्तकों में नहीं है। और दुष्ट शब्द (पुं) का अर्थ बताते समय वह महाभारत जैसे ग्रंथों को साक्ष्य देकर

⁴⁶ A female prostitute. <https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/harlot> Retrieved on 19.11.2021.

⁴⁷ (Of a woman) behaving or appearing in a very sexual way. <https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/wanton> Retrieved on 19.11.2021.

⁴⁸ मोनियर विलियम्स की संस्कृत-अंग्रेज़ी शब्दकोश में f. मतलब feminine gender से संबंधित है।

⁴⁹ L. abbreviation का अर्थ – See Abbreviations in A Sanskrit English Dictionary.

कहता है कि किस अर्थ में कहाँ प्रयोग किया गया है। लेकिन a bad or unchaste woman के लिए वह किसी ग्रंथ का साक्ष्य नहीं देता है। यानी उसे पता है कि यद्यपि दुष्टा शब्द को अचेस्ट वुमन (unchaste woman) जैसे मैथुन से संबंधित अर्थ दिया गया है लेकिन उसके लिए कोई प्रमाण नहीं है। लेकिन उसे यह भी लगा है कि स्त्रीलिंग में दुष्टा शब्द का प्रयोग प्रमुख शब्दार्थ है। इसीलिए उसने अपने शब्दकोश में दुष्ट शब्द के स्त्रीलिंग रूप को विशेषार्थ समझकर उसे रख लिया है।

इसलिए मोनियर विलियम्स स्वयं कहता है कि स्त्रियों का दुष्ट होने का अर्थ मैथुन से संबंधित है यह उसके पहले से ही प्रयोग में है। और विल्सन ने भी अपने शब्दकोश में इसका उल्लेख किया है। अगर मैथुन से संबंधित अर्थ उनके शब्दकोश की रचना के पहले ही प्रसिद्ध थी तो वह केवल पश्चिमियों का काल्पनिक अर्थ नहीं हो सकता है। उन्हें भारतीयों से ही यह अर्थ मिला होगा। फिर भी उन्हें इस विशिष्ट अर्थ के व्युत्पत्ति का स्रोत नहीं मिला होगा। इसलिए इन दोनों को यह स्पष्ट नहीं था कि यह अर्थ कैसे मिला होगा। फिर भी किसी भारतीय ने स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से ही संबंधित समझा होगा। अगर यह सच है तो हमें इसका उल्लेख किसी व्याख्याओं में मिलना होगा। लेकिन व्याख्याओं में अगर इस श्लोक के इस अर्थ के साथ कुछ और अर्थ भी मिलेगा तो यह सवाल उठता है कि यूरोपीयन लोगों ने बाकी अर्थ को अप्रधान समझकर इसी विशिष्ट अर्थ को प्रधान क्यों समझा है। इस प्रश्न का उत्तर पाने से पहले हम यह देखें कि भगवद्गीता को यूरोपीयनों ने भाषान्तरण करने से पूर्व क्या भारतीयों ने इस श्लोक को समझने की प्रयास किया है? अगर हाँ तो उन्होंने क्या अर्थ निकाले हैं?

६.२. संस्कृत की व्याख्याओं ने इस श्लोक को कैसे समझा है?

निम्नलिखित कोष्ठक में इस श्लोक के संस्कृत व्याख्याओं⁵⁰ को कालानुक्रम में दिया गया है:-

काल (लगभग)	व्याख्याता	व्याख्या
------------	------------	----------

⁵⁰ यहां के व्याख्याओं के चयन में प्रमुख रूप से महाराजा रणबीर सिंह के काल (१९वीं सदी) में प्रकाशित १८ व्याख्याओं से युक्त गीता के पुस्तक और गजानन शंभु साधले जी के परिष्कृत ११ व्याख्याओं से युक्त भगवद्गीता के पुस्तक पर अवलंबन किया गया है।

700 AD	शंकराचार्य	व्याख्यान नहीं किया है।
850 AD	राजानक रमाकांत	व्याख्यान नहीं किया है।
900 AD	भट्ट भास्कर	अस्पष्ट ⁵¹
950 – 1050 AD	अभिनव गुप्त	व्याख्यान नहीं किया है।
11वीं सदी	आनंदवर्धन	व्याख्यान नहीं किया है।
1017 – 1137 AD के आसपास	रामानुजाचार्य	व्याख्यान नहीं किया है।
1199 – 1278 AD के आसपास	मध्वाचार्य	व्याख्यान नहीं किया है।
12वीं सदी	आनंदगिरि	इन शब्दों का व्याख्यान नहीं किया है।

⁵¹ भास्कर भाष्य को पहली बार संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा १९६५ में प्रकाशित किया गया था। १९३३ में भास्करभाष्य के अस्तित्व के बारे में डॉ. बी.एन.के. शर्मा जी ने बताया था। यानी यह भाष्य २०वीं सदी तक प्रकाशन के लिए उपलब्ध नहीं था। चूँकि अब यह भाष्य उपलब्ध है यह कहा जा रहा है कि अभिनवगुप्त द्वारा उल्लेखित भट्टभास्कर भाष्य अलग व्यक्ति से लिखा गया है, वह यह भाष्य नहीं है। (एस. के. बेळवल्कर द्वारा परिष्कृत आनंद वर्धन के गीताभाष्य की प्रस्तावना को देख सकते हैं) इसलिए यह स्पष्ट नहीं है कि आज उपलब्ध भास्कर भाष्य क्या अभिनवगुप्त से प्राचीन है। इस भाष्य में पहले अध्याय के सभी श्लोकों की व्याख्या की गई है, जो तत्कालीन व्याख्याताओं ने नहीं की थी। यानी प्राचीन भाष्य परंपरा से भिन्नक्रम में इस भाष्य का पहले अध्याय के सभी श्लोकों की व्याख्या मिलती है। उपलब्ध भास्कर भाष्य में यह दिखाई देता है कि श्रियों के दुष्ट होने को चरित्रहीन कहा गया है (कुलश्रियः चरित्रहीनाः भवन्ति) और वर्णसंकर को संतति अर्थ दिया गया है (भास्कर भाष्य का हिंदी भाषान्तरण – वर्णसंकर कुल के नरकप्राप्ति का कारण बन जाता है। क्योंकि शुद्धवंश के संतान इहलोक और परलोक में सुखकारक बनते हैं। उसके विपरीत स्थिति में नरक, ऐसा आगम का कहना है)। अगर मान ले कि यह भाष्य प्राचीन है, तो गीता का यूरोपीयन भाषान्तरण होते समय यह भाष्य उपलब्ध न होने के कारण यह कह नहीं सकते हैं कि यूरोपीयनों ने 'प्राचीन' भाष्यों के अर्थ को उनके भाषान्तरणों में स्वीकार किया है। और इस भाष्य में पहले अध्याय को दिए गए अर्थ को, उसमें भी श्रियों का दुष्ट होने से संबंधित अर्थ को बाकी व्याख्याताओं ने उतनी गंभीरता से नहीं लिया है। क्योंकि १५वीं सदी तक के व्याख्याताओं ने किसी ने भी इनके भाष्यार्थ या भाष्य में प्रयुक्त शब्द का उल्लेख या उपयोग किया हुआ दिखाई नहीं देता है। बाद में भी कुछ व्याख्याताओं ने इस भाष्योक्त अर्थ को कहा है लेकिन कहीं पर भी इस भाष्य का उल्लेख नहीं करते हैं। इसलिए यद्यपि मान ले कि यह भाष्य प्राचीन है तो बस यह कह सकते हैं कि यह भी अर्थ इस श्लोक को है लेकिन यह जानने के लिए यह भाष्य उपयुक्त नहीं होगा कि कौन यूरोपीयनों को श्रीपु दुष्टासु श्लोक का यह विशेष अर्थ ही महत्वपूर्ण लगा जबकि बाकि अर्थ भी उपलब्ध थे। इसलिए वर्तमान प्रश्न उचित है कि कौन यूरोपीयनों को यह अर्थविशेष ही महत्वपूर्ण लगा।

1345 – 1388 AD के आसपास	जयतीर्थ	व्याख्यान नहीं किया है।
1473 – 1531 AD	वल्लभाचार्य	व्याख्यान नहीं किया है।
15वीं सदी	श्रीधर स्वामी	व्याख्यान नहीं किया है।
15वीं सदी	नीलकंठ	दुष्टासु – पुत्रार्थं वर्णान्तरम् उपासीनासु (दुष्टासु – संतान के लिए दूसरे वर्ण से संबंध बनाया हुआ)
	हनुमत् पैशाच भाष्य	प्रदुष्यन्ति – स्वैरिण्यः भवन्ति । वर्णसङ्करः – वर्णस्य वर्णान्तरमिश्रीकरणम्। (प्रदुष्यन्ति – स्वैरिणी बन जाती हैं। वर्णसंकर – एक वर्ण का दूसरे वर्ण से मिल जाना।)
1540 – 1640 AD	मधुसूदन सरस्वति	अस्मदीयैः पतिभिः धर्मम् अतिक्रम्य कुलक्षयः कृतः अस्माभिः अपि व्यभिचारे कृते को दोषः इत्येवं कुतर्कहताः कुलस्त्रियः प्रदुष्येयुः अथवा कुलक्षयकारीपतितपतिसंबंधादेव स्त्रीणां दुष्टत्वम्। (हमारे पतिलोग ने धर्म को लांघ कर कुल का नाश किया है। इसलिए हम भी अगर व्यभिचार करें तो क्या दोष है, इस तरह कुतर्क करते हुए कुलस्त्रियाँ दुष्ट हो जाती हैं। अथवा कुल का क्षय

		करने वाले गिरे हुए पतियों के साहचर्य से ही स्त्रियों की दुष्टता है।)
15वीं सदी	सदानंद	<p>अस्मदीयैः पतिभिः धर्मम् अतिक्रम्य कुलक्षयः कृतः अस्माभिः अपि व्यभिचारे कृते को दोषः इत्येवं कुतर्कहताः कुलस्त्रियः प्रदुष्येयुः। दुष्टासु नीचाभिगमनात्।</p> <p>(हमारे पतिलोग ने धर्म को लांघ कर कुल का नाश किया है। इसलिए हम भी अगर व्यभिचार करें तो क्या दोष है, इस तरह कुतर्क करते हुए कुलस्त्रियाँ दुष्ट हो जाती हैं। दुष्टासु – नीच पुरुषों से गमन करने से)</p>
1668 – 1784 AD	पुरुषोत्तम	<p>प्रदुष्यन्ति – व्यभिचारादिदोषयुक्ताः भवन्ति ।</p> <p>प्रदुष्यन्ति – व्यभिचार जैसे दोषों से युक्त बन जाती हैं।</p>
17वीं सदी	श्री वेंकटनाथ	स्पष्ट नहीं है।
1638 AD	सूर्यपंडित	<p>वर्णसङ्करः – सर्ववर्णानाम् एकीभावः।</p> <p>वर्णसंकर – सभी वर्ण का एक हो जाना ।</p>
1650 – 1720 AD	वनमाली	व्याख्यान नहीं किया है।

	गिरिधर दास	<p>प्रदुष्यन्ति – परपतिषु रतिं कृत्वा भ्रष्टाः भवन्ति।</p> <p>वर्णसङ्करः – ब्राह्मणादिवर्णविरहितः।</p> <p>प्रदुष्यन्ति – पर पतियों में आसक्त होकर भ्रष्ट बन जाती हैं। वर्णसंकर – ब्राह्मणादि वर्ण रहित।</p>
--	------------	---

अगर इस कोष्ठक को ध्यान से देखेंगे तो यह जान सकते हैं कि लगभग १५वीं सदी के पहले के किसी व्याख्याताओं ने इस श्लोक का व्याख्यान नहीं किया है। लेकिन १५वीं सदी के बाद के कुछ व्याख्याताओं ने स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से ही संबंधित अर्थ में व्याख्यान किया है। यहां कुछ व्याख्याओं के कालखंड स्पष्ट नहीं हैं लेकिन वे १५वीं सदी से पूर्व की व्याख्याएँ नहीं हो सकती हैं⁵²। १५वीं सदी के पहले की संस्कृत व्याख्याओं में इस श्लोक का व्याख्यान नहीं किया गया है लेकिन १३वीं सदी की मराठी भाषा के ज्ञानेश्वरी में इस श्लोक का व्याख्यान किया गया है। कुछ लोग ज्ञानेश्वरी का उल्लेख करके कहते हैं⁵³ कि वहाँ स्त्रियों का दुष्ट होना परपुरुष संभोग से ही संबंधित माना गया है, इसलिए इस श्लोक को मैथुन का अर्थ प्राचीन काल से ही है। लेकिन यह वाद वहाँ के वाक्यों को देखकर स्पष्ट नहीं लगता है। ज्ञानेश्वरी के कुछ वाक्यों का हिंदी भाषान्तरण इस तरह है:-

जो यमनियम छोड़ देते हैं उनके इंद्रिय सभी स्वेच्छाचरण करने लगते हैं। इसलिए कुलस्त्रियों में पापाचरण बढ़ जाता है। और उत्तम और अधम लोगों के बीच समागमन होने के कारण ब्राह्मणादि वर्ण मिल जाते हैं। इन सबसे कुलधर्म नष्ट हो जाते हैं⁵⁴।

⁵² हनुमत् - पैशाच भाष्य यद्यपि हनुमान की कथा से संबंधित है आज उपलब्ध भाष्य की रचना के समय को लेकर स्पष्टता नहीं है। विद्वानों का मत है कि यह प्राचीन भाष्य नहीं हो सकता है। अधिक स्पष्टता के लिए गजानन शंभु साधले जी के परिष्कृत ११ व्याख्यायुक्त गीतापुस्तक की Publisher's note को पढ़ सकते हैं।

⁵³ चैतन्य मजलुकोडिगे जी इसको ध्यान में लाए हैं।

⁵⁴ जे यमनियम टाकती । तेथ इंद्रिये सैरा राहाटती । म्हणोनि व्यभिचार घडती । कुलस्त्रियांसि । ४९ । उत्तम अधमी संचरती । ऐसे वर्णावर्ण मिसळती । तेथ समूह उपडती । जातिधर्म । ५० ॥ ज्ञानेश्वरी, कन्नड भाषान्तर – कुलकर्णी १९३५ ।

इन वाक्यों के मूलपाठ (ज्ञानेश्वरी) में व्यभिचार शब्द है लेकिन उस शब्द का प्रत्यक्ष अर्थ परपुरुषमैथुन नहीं है। जब एक वस्तु किसी दूसरे के साथ सदा रहता है तब उसे सहचार कहते हैं। जब वह साहचर्य सदा नहीं होता तब व्यभिचार कहलाता है। उदाहरण के लिए अग्नि के जलन के लिए प्राणवायु अनिवार्य होने के कारण उन दोनों को सहचारी कहते हैं। लेकिन लकड़ी अनिवार्य नहीं है इसलिए आग लकड़ी का व्यभिचारी है। इसलिए ज्ञानेश्वरी में व्यभिचार शब्द के होने मात्र से यह कह नहीं सकते हैं कि दुष्ट होना परपुरुषमैथुन से संबंधित विषय है। इसलिए उपरोक्त भाषान्तरण में व्यभिचार शब्द को पापाचरण शब्द में अनुवाद किया गया है। और ज्ञानेश्वरी के इन वाक्यों में यह स्पष्ट है कि मैथुन, संतति जैसे विचारों की चर्चा नहीं है। समागमन शब्द हिंदी में है लेकिन यह कह नहीं सकते कि वह केवल मैथुन अर्थ से संबंधित है। इसलिए स्पष्टता से कह नहीं सकते हैं कि ज्ञानेश्वरी में भगवद्गीता के इन वाक्यों को परपुरुषमैथुन अर्थ के संबंध में समझा गया है।

इसलिए यह कह सकते हैं कि १५वीं सदी के बाद के कुछ लोगों ने दुष्ट शब्द को मैथुन अर्थ के संबंध में व्याख्यान किया है। और उपरोक्त संस्कृतव्याख्याओं में यद्यपि १५वीं सदी के बाद “स्त्रीषु दुष्टासु” जैसे शब्दों का व्याख्यान करने लगे हैं परन्तु सभी ने एक समान व्याख्यान नहीं किया है। उपरोक्त व्याख्याओं में तीन व्याख्याकारों ने स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन के संबंध में व्याख्यान किया है। हनुमत्-पैशाच भाष्य में कहा गया है कि स्त्रियों का दुष्ट होना यानी स्वैरिणी होना है। स्वैरिणी शब्द का अर्थ यह भी है कि परपुरुष से मैथुन करनेवाली⁵⁵। उसी तरह नीलकंठ भी कहते हैं कि संतान हेतु दूसरे वर्ण के साथ गमन करना। और गिरिधरदास के व्याख्या में भी स्पष्ट कहा गया है कि परपुरुष में आसक्त होना।

लेकिन जब मधुसूदन सरस्वति के व्याख्यान को देखेंगे तो यह कहा गया है कि हमारे पतिलोग ने धर्म को लांघ कर कुल का नाश किया है इसलिए हम भी व्यभिचार करें तो क्या दोष है, इस तरह से कुतर्क करने से स्त्रियाँ दुष्ट बन जाती हैं। यहां व्यभिचार शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है। इस वाक्य से बस यह स्पष्ट होता है कि जिस तरह पतिजन ने धर्म का लंघन किया है उसी तरह हम भी धर्म से व्यभिचार करे तो क्या

⁵⁵ स्वैरिणी पांसुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना । अवीरा निष्पतिसुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ अमरकोश ५८० ।

दोष है। इसलिए इस वाक्य से यह स्पष्ट नहीं होता है कि क्या करने से कुलस्त्रियों के धर्म का व्यभिचार होगा। मधुसूदन सरस्वति के दूसरे विवरण से यह अर्थ प्राप्त होता है कि पतिजन पतित होने के कारण स्त्रियाँ भी दोषी बन जाती हैं। इसलिए मधुसूदन सरस्वति के इस दूसरे विवरण से यह ज्ञात होता है कि वास्तव में स्त्रियाँ दुष्ट नहीं होती हैं लेकिन अपने पतियों के आचरण के कारण उन्हें दुष्ट माना जाता है। और सदानंद के व्याख्या भी मधुसूदन सरस्वति के व्याख्यान से मेल खाती है। यद्यपि पुरुषोत्तम ने व्यभिचार शब्द का प्रयोग किया है उसका अर्थ स्पष्ट नहीं है। सूर्यपंडित ने वर्णसंकर शब्द का व्याख्यान किया है लेकिन उससे संतति या मैथुन जैसा अर्थ नहीं निकलता है। और उसके व्याख्या में स्त्रियों का दुष्ट होने का विवरण नहीं है।

६.३. संस्कृत व्याख्याएँ क्या कहती हैं?

अनेक भारतीयों ने १०वीं सदी के पहले ही भगवद्गीता का व्याख्यान करनी शुरू किया है। लेकिन जब हम गीता का “अधर्माभिभवात्” श्लोक की व्याख्याएँ देखते हैं तो शंकर जैसे आचार्यों की परंपरा में वर्तमान श्लोक के अर्थ के बारे में चर्चा नहीं किया गया है। और १५वीं सदी तक की संस्कृतव्याख्याओं के अलावा ज्ञानेश्वरी जैसे अन्य निरूपण में भी इस श्लोक पर चर्चा उस अर्थ में नहीं हुआ है जैसे कि अब किया जा रहा है। १५वीं सदी के बाद के व्याख्याओं में मैथुन जैसे अर्थ दिए गए हैं लेकिन वह प्रधान अर्थ की तरह दिखाई नहीं दे रहा है। लेकिन पश्चिमियों के भाषान्तरण शुरू होने के बाद इस श्लोक के लिए यह विशिष्ट अर्थ प्रधान हो गया है। उतना ही नहीं इन भाषान्तरणों और व्याख्याओं में बाकी के संभावनाएँ गौण हो गए हैं। यानी एक कालखंड के बाद इस श्लोक के अर्थ को अस्पष्ट बनाया गया है।

अर्थात् पश्चिमी लोग इस श्लोक का भाषान्तरण करते समय यदि पहले की व्याख्याओं को परखे होते तो उनके सामने दो संभावनाएँ स्पष्ट थीं। एक है स्त्रियों का दुष्ट होने को संभोग, अनैतिकता जैसे और वर्णसंकर को संतति, जातिसंकर जैसे भाषान्तरण करना। दूसरा कि मैथुन जैसे अर्थों के बिना ही इस श्लोक का भाषान्तरण करना। लेकिन जब पश्चिमी भाषान्तरणों को देखा जाता है तो वे प्रारंभ से ही स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर को मैथुन, अनैतिकता, संतति जैसे अर्थ के संबंध में माने हैं। पहली बार गीता को

अंग्रेज़ी में भाषान्तरण करने वाला चार्ल्स विल्किन्स के भाषान्तरण को यदि देखा जाए तो उसने वर्णसंकर को स्पूरियस ब्रूड [spurious brood] शब्द से भाषान्तरण किया है। यानी उसे इसमें कोई शंका नहीं है कि वर्णसंकर संतति से संबंधित है। उसके भाषान्तरण में स्त्रियों का दुष्ट होने को “विशियस (vicious)” शब्द से कहा गया है जिससे मैथुन अर्थ तो नहीं निकलता है लेकिन अगर वर्णसंकर को संतति का अर्थ है तो स्त्रियों का विशियस (vicious) होना मैथुन से ही संबंधित होना चाहिए। यहाँ मैथुन का अर्थ अपने पति से संभोग करने से संबंधित नहीं है। परपुरुषों से संभोग करने की अर्थ में विशियस (vicious) शब्द का प्रयोग हुआ है। यानी चार्ल्स विल्किन्स के भाषान्तरण में इस श्लोक का अर्थ स्पष्ट है कि यह परपुरुष मैथुन और उससे पैदा होने वाली संतति के बारे में है। उसके बाद के भाषान्तरणों में और स्पष्टता से अचेस्ट (unchaste), अडल्ट्री (adultery) जैसे शब्द मिलते हैं। इसलिए यह स्पष्ट है कि पश्चिमियों को यह विशिष्ट अर्थ ही (लैंगिक संबंध और संतति) प्रधानता से दिखी है। इस तरह भगवद्गीता के इस श्लोक का यह विशिष्ट अर्थ प्रधान होने में यूरोपीयन लोगों की भूमिका अत्यंत प्रमुख है। जब हम संस्कृत की व्याख्याओं को देखते हैं तब यह स्पष्ट होता है कि यूरोपीयन लोगों के गीता को जानने की एक इच्छाप्रयास की ओर से यह विशिष्ट अर्थ सामने आया है।

७. एक महत्वपूर्ण प्रश्न

इस संदर्भ में अगर हम अब तक की चर्चा का पुनरावलोकन करें तो हमने पहले देखा था कि भाषान्तरणों में स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर को मैथुन, संतति जैसे विशिष्ट अर्थ (स्पूरियस ब्रूड (spurious brood), विशियस विमन (vicious women), अचेस्ट (unchaste), अडल्ट्री (adultery), कर्प्ट (corrupt) जैसे शब्दों) में भाषान्तरण किया गया है। भाषान्तरणों में अलग-अलग शब्द प्रयोग किए हैं लेकिन उन सब में प्रत्यक्षरूप से या परोक्षरूप से इस श्लोक को यही अर्थ दे रहे हैं। यानी ये भाषान्तरण पाठकों को यह अर्थ समझा रहे हैं कि स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर को और कोई अर्थ की संभावना ही नहीं है सिवाय पूर्वोक्त अर्थ के। लेकिन इन भाषान्तरणों से यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि इसी अर्थ को क्यों और कैसे सही माना गया है।

महाभारत जैसे ग्रंथों के निरीक्षण करने से हमने यह जाँच किया कि क्या संस्कृत ग्रंथ स्त्रियों के दुष्ट होना और वर्णसंकर को मैथुन तथा संतति से संबंधित विषय माने हैं। इस जाँच से यह निश्चय नहीं हो सका कि स्त्रियों की दुष्टता और वर्णसंकर मैथुन, संतति जैसे विषयों से संबंधित है। और भाषान्तरण के अर्थ को मान लेने से बाकी श्लोकों को समझने में होने वाली उलझनों को देखा। उतना ही नहीं व्याख्याओं के निरीक्षण से हमने यह भी देखा कि १५वीं सदी तक भारतीयों ने इन श्लोकों का व्याख्यान नहीं किया और उसके बाद के व्याख्यानों में मैथुन, संतति जैसे अर्थ प्रधान नहीं है। इस चर्चा से एक और प्रमुख बिंदु हमारे ध्यान में आया है। कि पश्चिमी लोगों के गीता का भाषान्तरण करना शुरू करने के बाद मैथुन जैसे विशिष्ट अर्थ सामने आकर प्रधान हुए हैं। इनके भाषान्तरण के बाद इस श्लोक को विभिन्न अर्थ में समझने की संभावनाओं पर चादर लग गया है। और जैसे पश्चिमी शिक्षण बढ़ता गया भारतीयों को भी यही अर्थ सही लगने लगा। यानी जिस श्लोक को लगभग १५वीं सदी तक किसी व्याख्याताओं ने व्याख्यान नहीं किया है, और १५वीं सदी के बाद के व्याख्यानों में भी मैथुन या संतति के अर्थ प्रधान नहीं थे, और संस्कृत ग्रंथों के द्वारा यह भी निश्चय नहीं हो सका कि उस श्लोक के किन विचारों से मैथुन जैसे विषय संबंधित है, उस श्लोक को पश्चिमी भाषान्तरण के शुरू होने के बाद यह अर्थ मिला है कि स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर परपुरुषमैथुन, संतति जैसे विषयों से संबंधित है।

इससे एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। कि क्यों यूरोपीयन लोगों को इस श्लोक का एक विशिष्ट अर्थ ही सही लगा? और भारतीय लोग क्यों उसी व्याख्यान को फिर से दोहरा रहे हैं? इस प्रश्न पर अगले खंड में विचार करेंगे।

७.१. पश्चिमी निरूपण और यूरोपीयन अनुभूति

हमने देखा कि “अधर्माभिभवात्” श्लोक का यह विशिष्ट अर्थ यूरोपीयन भाषान्तरणों से प्रसिद्ध हुआ है। यूरोपीयन लोगों से भारतीय ग्रंथों का भाषान्तरण प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही यूरोप में भारतीय समाज को लेकर एक विलक्षण धारणा बन गई थी। लेकिन भारत के बारे में यूरोपीयन लोगों की यह सोच रातोंरात नहीं बनी थी। भारत में आने से पहले ही उनको क्रिश्चियन थियोलॉजी (Christian theology) के आधार

पर विश्व के सारी संस्कृतियों के बारे में कुछ धारणाएँ थी। उन धारणाओं ने भारतीय संस्कृति को विलक्षण तरह से समझने में सहायता की। कोई व्यक्ति किसी अनजान विषय को उसे ज्ञात विषयों से ही समझने का प्रयास करता है और वह सहज स्वभाव है। यूरोपीयन लोगों ने भी वही किया। उन्होंने अनजान भारत को उन्हें परिचित संस्कृति की दायरे में ही जानने का प्रयास किया⁵⁶। लेकिन भारतीय संस्कृति को समझने के लिए वह चौखट उपयोगी न होने के कारण भारतीय संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति की प्रतिकृति की तरह बना दिया। इसलिए यूरोपीयन लोगों की कृतियाँ उनकी संस्कृति के माध्यम से भारतीय संस्कृति को देखने का है, न कि वे भारतीय संस्कृति के बारे में कुछ कहते हैं।

७.१.१. यूरोपीयन लोगों के अनुभव

यूरोपीयन लोगों के भारत संबंधी अनुभूति को जानने के लिए एक उदाहरण को देखेंगे। लुडोविको दी वर्तेमा (Ludovico di Varthema) (1470 – 1517), एक इतालवी यात्री, कालीकट के राजा के बारे में कुछ ऐसा कहता है – “The King of Calicut is a Pagan and worships the devil in the manner you shall hear”⁵⁷, इस तरह शुरू करके उस राजा के पूजा करने के आचरण को चित्रित करता है। इस वाक्य को देखने से पता चलता है कि लुडोविको दी वर्तेमा (Ludovico di Varthema) को राजा का पूजाचरण डेविल वर्शिप (devil worship) जैसे दिख रहा है। यानी भारतीय संस्कृति में गाँड़ (God), डेविल (devil) जैसे विचारों पर चर्चा नहीं है लेकिन इन परिकल्पनाओं के दृष्टि से ही उस राजा के आचरण को उसने डेविल वर्शिप (devil worship) मान लिया। कालीकट राजा के आचरण को वर्तेमा (Varthema) अपनी संस्कृति के आधार पर समझने का प्रयास कर रहा है। उसकी संस्कृति में विश्वस्रष्टा गाँड़ (God) एक ही है और मात्र उसे worship करना है। गाँड़ (God) को अस्वीकार करने वाला दुष्ट शक्ति ही डेविल (devil) है। वह डेविल (devil) गाँड़ (God) को वर्शिप

⁵⁶ यूरोपीयनों के भारत को लेकर प्रारंभिक व्याख्याओं के लिए Ludovico di Varthema (1470-1517), St. Francis Xavier (1506-1552) इनके लेख को देख सकते हैं। यूरोपीयन व्याख्याओं से संबंधित चर्चा करते समय इन लेखों को डंकिन जलकि और सूफिया पठाण ध्यान में लाएँ।

⁵⁷ Jones 1863:136

(worship) करने से लोगों को भड़काता है। इसलिए वह झूठे देवताओं को बनाता है⁵⁸। इसलिए सभी संस्कृतियों में गाँड़ (God) के अस्तित्व का ज्ञान लोगों को है लेकिन डेविल (devil) के प्रभाव से लोग गाँड़ (God) को वर्शिप (worship) करने के बजाय अजीब मूर्तियों को लेकर वर्शिप (worship) करते हैं। यह उसकी संस्कृति की धारणा है।

इस संदर्भ में वर्तेमा (Varthema) को राजा की नरसिंह पूजा 'गाँड़ (God)' की वर्शिप (worship) न होकर डेविल (devil) की वर्शिप (worship) की तरह दिखा। इसलिए अगर पूछें कि क्या राजा का वह आचरण डेविल वर्शिप (devil worship) है तो, नहीं, वह वर्तेमा (Varthema) की सोच है न कि भारतीय संस्कृति की अनुभूति। तो उसका कहना क्या राजा के पूजा के बारे में कुछ कहता है? बिल्कुल नहीं। क्योंकि राजा जिस देवता की आराधना करता था वह डेविल (devil) भी नहीं, और उसकी आराधना न वर्शिप (worship) हो सकती है⁵⁹। लेकिन इसको वर्तेमा (Varthema) के डेविल वर्शिप (devil worship) कहने से भारतीय संस्कृति के आचरण पश्चिमी संस्कृति के प्रतिकृति में बदल गई है। अर्थात् पश्चिमी लोग असली गाँड़ (God) का वर्शिप (worship) करते हैं और भारतीय लोग भटके हुए हैं इसलिए डेविल (devil) की वर्शिप (worship) करते हैं। इसलिए उसके वाक्यों से यह समझ आता है कि दोनों संस्कृतियों में वर्शिप (worship) करने की प्रथा है और पश्चिमी संस्कृति सही मार्ग पर है और भारतीय संस्कृति 'गाँड़ (God)' की वर्शिप (worship) न करने के कारण रास्ता भटक गया है। लेकिन उस राजा की पूजा में न तो डेविल (devil) है और न वह वर्शिप (worship) है। इसलिए वर्तेमा (Varthema) के कथन से उसकी संस्कृति के गाँड़ (God), डेविल (devil) जैसे विचारों के बारे में समझ आता है न कि राजा की आराधना के बारे में कुछ पता चलता है।

इस तरह राजा की आराधना और डेविल वर्शिप (devil worship) के बीच कोई संबंध ही नहीं है लेकिन वर्तेमा (Varthema) को अपनी संस्कृति की दृष्टि से वह डेविल वर्शिप (devil worship)

⁵⁸ हेगडे 2019:40

⁵⁹ पूजा और worship के बीच के अंतर को जानने के लिए राजाराम हेगडे के लेख को देख सकते हैं। हेगडे 2019:33

जैसे दिख गया है। यह केवल एक उदाहरण है। यह मात्र वर्तेमा (Varthema) की अनुभूति नहीं थी। यूरोपीयन लोगों को अपनी संस्कृति की दृष्टि से भारतीय पूजापद्धति डेविल वर्शिप (devil worship) की तरह दिखाई दी और इस तरह की विवरण उनके चर्चाओं में जगह बनाकर मूर्तिपूजकों के पूजापद्धति का वर्णन करने का तरीका ही बदल गया। आज भी मूर्तिपूजा को अंधविश्वास कहना यूरोपीयन व्याख्या का पुनरुत्पादन है। मूर्तिपूजा के बारे में इन व्याख्याओं से यह जान सकते हैं कि यूरोपीयन लोग क्यों पूजा के बारे में इस तरह समझे हैं लेकिन वह पूजा के बारे में कुछ नहीं कहता है।

इस उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि, *यूरोपीयन व्याख्याएँ हमें यह बताती हैं कि यूरोपीयन लोग कैसे भारत को अपनी संस्कृति की दृष्टि से समझे और उससे हमें उनकी संस्कृति का परिचय होता है न कि भारतीय संस्कृति का परिचय।* लेकिन उनकी संस्कृति में डेविल (devil), वर्शिप (worship) जैसे शब्दों को समझने के लिए आवश्यक परिकल्पनाएँ होने के कारण उन्हें यही व्याख्याएँ भारत के संबंध में सही लगा। उतना ही नहीं, पुराने व्याख्याएँ नई व्याख्याओं के नींव बने। इस तरह व्यवस्थित ढंग से भारत के बारे में यूरोपीयन व्याख्याओं ने एक स्पष्ट संरचना पाई। वही संरचना भारत के बारे में भविष्य की व्याख्याओं के लिए बुनियाद बनी। इस तरह इस संरचना ने आगे की व्याख्याओं को निर्देश देते हुए उन नए व्याख्या के द्वारा अपने आप को सशक्त बना लिया। लेकिन यह संरचना एक संस्कृति दूसरी संस्कृति को अपनी सांस्कृतिक अनुभव की दृष्टि से समझने की प्रक्रिया से निर्मित है। उसमें और भारतीय जीवन में कोई संबंध न होने के कारण, वह संरचना जिस संस्कृति (भारतीय संस्कृति) के बारे में कहने के लिए बनी है उसके बारे में कुछ न कहकर, जो संस्कृति (यूरोपीयन) उसका निरूपण कर रही उसका परिचय देती है।

वर्तमान लेख की चर्चा पर लौटे तो पश्चिमी लोगों ने भगवद्गीता के एक श्लोक को विशिष्ट अर्थ बताया है। लेकिन उन भाषान्तरणों से या भारतीय ग्रंथों का निरीक्षण करने से यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि वह अर्थ कैसे लगाया गया है। फिर भी सभी यूरोपीयन लोगों को यह विशिष्ट अर्थ ही सही लगा है। यानी मानना पड़ेगा कि जैसे कि पूजापद्धति के बारे में उदाहरण में देखा है उसी तरह स्त्रियों का दुष्ट होना और वर्णसंकर

को पश्चिमियों के इस तरह समझने में उनकी संस्कृति के अनुभव ही सहायक हैं। अगर ऐसा है तो, भारतीय संस्कृति को समझने के लिए किस तरह से यूरोपीयन लोगों ने अपनी संस्कृति की दृष्टि से प्रयास किए हैं? वे वर्तमान गीता की श्लोक को समझने में कैसे उपयुक्त बने? इस पर विचार करेंगे। इसके लिए अगले खंड में संक्षेप में देखेंगे कि यूरोपीयन अनुभूति में भारतीय संस्कृति का चित्र किस तरह निर्मित हुआ।

७.२. पश्चिमी व्याख्या की रचना

लगभग १४वीं सदी से यूरोपीयन लोग भारत को आकर भारतीय समाज और ग्रंथों के बारे में व्याख्या करने का प्रयास कर रहे हैं। उन्हें भारतीय सामाजिक संरचना (सोशियल स्ट्रक्चर social structure) को समझना महत्वपूर्ण था। इस प्रसंग में जब वे भारत में आए तो उन्हें भारतीय समाज में अनेक जातियाँ दिखी। इसलिए उन्हें यह प्रश्न था कि जातियों को कैसे समझा जाए। जातियों को समझने में उन्हें उनकी सांस्कृतिक अनुभव सहायक बने। उनके अनुभव में रहे ओल्ड टेस्टामेंट (Old Testament) में कहा गया ट्राईब्स (tribes) भारत की जातियों पर विचार करने की प्रारंभिक संरचना बनी। यानी भारत के जातियों को समझने के लिए उनके पास इज़राईल की १२ tribes का मानदंड था। गाँड़ (God) के साथ के अनुबंध (काँवेनेन्ट covenant) के तहत यहूदी ट्राईब्स (tribes) एक नेशन (Nation) बने। God ने उन्हें कानून (लाँ law) दिया था कि किस तरह से जीना है। इन १२ ट्राईब्स (tribes) के जूडिश नेशन (Jewish nation) के लेवाईट्स (Levites) नाम के ट्राईब (tribe) को प्रीस्ट (priest) माना गया था। उन्हें गाँड़ (God) के साथ किया गया उस काँवेनेन्ट (covenant) का परिपालन करने का दायित्व था। इसलिए मोसेस् (Moses) को दिए गए कानून का विवेचन करने का विशेष अधिकार उन्हें था⁶⁰। लेवाईट्स (Levites) लोग रिलिजियस (religious) आचारों को निभाते थे। यह अधिकार लेवाईट्स (Levites) को

⁶⁰ "According to the Old Testament, the tribes of the Jews had become one nation through a covenant with God. The offer and substance of this covenant was revealed to Moses at Mount Sinai and engraved in the tables of the Decalogue, which were then deposited in the Ark of the Covenant. While the laws given with the covenant expressed God's requirements of Israel, His offer of covenant also came with a divine promise: "You shall be to me a kingdom of priests and a holy nation" (Exodus 19:6)". De Roover 2017:180

परंपरा से प्राप्त हुआ था। इस तरह यहूदियों के नेशन (Nation) में प्रीस्टर (priests) का प्रमुख स्थान था।

भारत में जब उन्होंने जातियाँ देखी और उनमें ब्राह्मण समूह को देखा जो पूजापाठ करते थे तो उन्हें यह समझने के लिए उनका अनुभव सहायक बना। जैसे यहूदियों के लिए नेशन (Nation) है उसी तरह हीदन (Heathen) के लिए भी एक नेशन (Nation) है और जैसे यहूदियों को गाँव (God) ने मोसेस (Moses) के द्वारा लाँस् (laws) दिया है उसी तरह भारत के हीदन (Heathen) नेशन (Nation) को गाँव (God) से आया हुआ मनु का कानून (लाँस् ऑफ़ मनु Laws of Manu) है। और इस हीदन (Heathen) नेशन (Nation) में अनेक tribes हैं और जैसे कि यहूदियों में है यहाँ भी एक प्रीस्टर ट्राईब (priestly tribe) है। ब्राह्मण समूह जो पूजापाठ करता था उसको लेवाईट्स (Levites) के साथ मिला दिया⁶¹। इसलिए वे मान गए कि गाँव (God) के कानूनों को समझाना, उसको अमल में लाना और रिलिजियस (religious) आचारों को निभानेवाले लेवाईट्स (Levites) के समान यहाँ के ब्राह्मण हीदन (Heathen) नेशन (Nation) के परंपरागत प्रीस्टर (priests) हैं⁶²।

७.२.१. अच्छूत कौन है?

जो मोसेस (Moses) के लास (laws) का अनुसरण नहीं करते थे उन्हें इज़राईल नेशन (Nation) से बहिष्कृत किया जाता था और वे गाँव से बाहर जीते थे। इस बात ने 'अच्छूत' का विचार करने के लिए

⁶¹ "The image of "a heathen nation" made up of "tribes" or "lineages" derived from the conception of the Jews as a nation consisting of tribes that were traced to different forefathers and united by a common religion and worship of God. When Della Valle said that "the employment" of the Brahmins is nothing but "the divine worship and the service of temples and learning" and that they hold "the office of priests," he had already transformed them into an equivalent of the tribe of the Levites, whose role in Jewish religion was described along similar lines (Grey 1892, 77–80). It is after having conceptualized "the heathen nation of India" as a variant of the ancient nation of Israel that these seventeenth-century authors then postulate explicit similarities between the Indian heathens and the Jews. The Brahmins among the Gentiles, Della Valle said, resemble the Levites among the Jews. In fact, Rogerius (1651, 10–11, 33, 60) added, it was not simply the case that Jews and Brahmins had many things in common but also that the latter had adopted practices and stories from the former". De Roover 2017 :180

⁶² अधिक जानकारी के लिए – De Roover 2017.

यूरोपीयन लोगों की मदद की। अगर मनु का कानून (लॉस् ओफ़ मनु Laws of Manu) है तो उसका अनुसरण नहीं करने के कारण बहिष्कृत लोग भी होने चाहिए। इसलिए बाते बनाई गई कि गाँव से बाहर रहने वाले चंडाल जैसे लोग मनु का कानून पालन न करने के कारण बहिष्कृत होकर 'अछूत' बन गए थे⁶³। अछूत या अस्पृश्य जैसे शब्द प्राचीन ग्रंथों में प्रयोग नहीं किए हैं, लेकिन "औटकास्ट्स (outcastes)" या "अनटचबिल्स (untouchables)" शब्दों के पर्याय के रूप में अस्पृश्य शब्द उत्पन्न हुआ⁶⁴। इस तरह यूरोपीयन लोगों ने अपने ज्यूस् (Jews) के नेशन (Nation) की परिकल्पना की अनुभूति से उसकी प्रतिकृति की तरह हीदन नेशन (Heathen Nation) को देखा। और मध्यकालीन यूरोप के सामाजिक संरचना के बारे में चर्चा करते समय एस्टेट्स (estates)⁶⁵ के बारे में कहा जाता है। एस्टेट्स (estates), क्रिश्चियन (Christian) जगत की श्रेणीकृत सामाजिक व्यवस्था थी, इस परिकल्पना से भारतीय समाज की जातियों को और ग्रंथों में कहे गए चातुर्वर्ण्य⁶⁶ की तुलना कर, इन दोनों में समानता है और भारतीय समाज की जातियाँ ग्रन्थ में कहे प्रकार से श्रेणीकृत रूप में हैं, ऐसे देखने में एस्टेट्स (estates) की परिकल्पना ने मदद की। इस तरह यूरोपीयन लोगों ने अपने समाज में उपलब्ध विभिन्न परिकल्पनाओं का उपयोग करके भारतीय समाज को उसके फीके हुए प्रतिरूप की तरह बनाया।

७.२.२. अंतर्जाति विवाह और 'दूषित' संतति

⁶³ अधिक जानकारी के लिए – De Roover 2017.

⁶⁴ "Hence this passage does not help in establishing the theory of untouchability for Vedic times". Kane 1997:167. "When in modern times the so-called untouchables are referred to as Panchamas, that is something against the smriti tradition". Kane 1997:168. "Gradually however, a distinction was made between Sudras and castes like Chandalas. Fresh castes were then added to the list of untouchables by customs and usage and the spirit of exclusiveness, though there is no warrant of the Shastra for such a procedure". Kane 1997:168.

⁶⁵ <https://www.britannica.com/topic/Estates-General> Retrieved on 03.12.2021.

⁶⁶ Abbe Dubois , एक फ्रेंच मिशनरी द्वारा लिखित Hindu manners, Customs and Ceremonies नामक पुस्तक में भारतीय समाज के बारे में विवरण मिलती है। उसमें कहता है कि यहां ब्राह्मणादि चातुर्वर्ण्य वर्गीकरण से अधिक बायां और दाहिने हथ्ये का वर्गीकरण प्रचलित है। लेकिन भारतीय समाज को समझने के लिए ये दायां-बायां वर्गीकरण उपयुक्त नहीं समझकर कहता है कि – "this appears to be but a modern invention, since it is not mentioned in any of the ancient books of the country". (Dubois 2014:26) उसे समाज की वास्तविक स्थिति से अधिक ग्रंथों में कहा गया चातुर्वर्ण्य महत्वपूर्ण लगा। इसका कारण है उनके समाज की सांस्कृतिक अनुभूति।

यूरोपीयनों ने भारत के ब्राह्मणादि चार समूह के बारे में विचार करने के लिए पुर्तगाली भाषा से 'कास्टा (casta)' शब्द को लेकर कास्ट (caste) शब्द का प्रयोग किया। प्रारंभ में यह शब्द⁶⁷ वर्णों के लिए प्रयोग किया जाता था, बाद में यूरोपीयन लोग यह समझे की वर्णों से ही जातियाँ बनी है इसलिए जातियों के लिए भी इस शब्द का प्रयोग करने लगे। इस शब्द को पुराने क्रिश्चियन (Christian) और नए नए मत-परिवर्तन किए हुए क्रिश्चियन (Christian) के बीच अंतर (प्यूरिटि ओफ़ ब्लड purity of blood) करने के लिए पुर्तगाल और कई यूरोपीयन देशों में प्रयोग किया जाता था। पुराने क्रिश्चियन (Christian) यह मानते थे कि वह नए नए मत-परिवर्तन किए हुए क्रिश्चियन (Christian) से शुद्ध और श्रेष्ठ हैं। इसलिए नए सिरे से मतांतरित हुए लोगों से भिन्न होकर अपनी श्रेष्ठता और पवित्रता को बचाने के लिए पुराने क्रिश्चियन (Christian) से विवाहनिषेध (एण्डोगमि Endogamy) प्रमुख था। इसी लिए अगर कोई 'पुराने क्रिश्चियन (Christian)' मतांतरित व्यक्ति से विवाह करता था तो यह माना जाता था कि उनकी संतति "दूषित" संतति है ⁶⁸। भारत में कई जातियों के बीच रहे विवाह नियमों को समझने के लिए यूरोप की अपनी अनुभूति यहाँ उपयोगी बनी है। इसलिए जातियाँ और एण्डोगमि (Endogamy) के बीच संबंध है और यह एण्डोगमि (Endogamy) की प्रथा भारतीय रिलिजन (religion) की परिप्रेक्ष्य से आई है। उन्होंने मान लिया की यहाँ भी "प्यूरिटि ओफ़ ब्लड (purity of blood)" प्रमुख है और विभिन्न जातियों

⁶⁷ उदाहरण के लिए, Abbe Dubois वर्णों को caste शब्द का प्रयोग करता है। Dubois 2014:15

⁶⁸ Farek sketches the historical context that paved the way for the growth and development of this notion of endogamy in the West. It goes back to the massive religious reorganization that was taking place in Christian conquered territories during 1490s. In these territories, the local population who were Jews and Muslims were left with two options - either to go for conversion or emigrate. The forcibly converted people came to be called "New Christians" who were looked down by the "Old Christians". The growing hostility turned into rivalry and the Old Christians in order to defend their position and purity of faith created this concept of "purity of blood" (154). Old or traditional Christians thought that they had pure blood as they were born in original Christian families where as the New Christians had contaminated blood as their ancestors believed in the false religions. Therefore, marriages between Old and New Christians were never encouraged as it was thought that the children born out of such unions were also contaminated. Soon the distinctions turned into hierarchy. Pure Old Christians were at the top of this hierarchy and began to enjoy all privileges while people from mixed or completely impure lineages were discriminated and purity of blood statutes were also passed. Hence, Farek claims that it was this distinction of "purity of blood" that the Spanish and Portuguese carried with them to their conquered territories of Africa, America and Asia. See for more details - Farek 2017:127-168.

के संबंध से उत्पन्न संतति “दूषित” संतति है। जैसे कि पहले कहा गया आरम्भ से ही कास्ट (caste) शब्द को वर्णों के संबंध में प्रयोग किया जाता था। इसलिए वर्णसंकर शब्द को एक वर्ण के लोगों का दूसरे वर्णों के लोगों के साथ मिल जाने का अर्थ मिला, जो आगे बढ़कर जातिसंकर जैसे व्याख्या हुए। उन्होंने समाज में जातियों के बीच विवाहनिषेध देखा, जिसके लिए ग्रंथों का प्रमाण चाहिए था वह उन्हें वर्णसंकर शब्द से मिला। इस तरह विवाहनिषेध, दूषित संतति, जातिसंकर जैसे ग्रंथविषयों को समझने के लिए आवश्यक संरचना यूरोपीयन अनुभूति की ‘कास्टा (casta)’ से संबंधित चर्चाओं से प्राप्त हुई। इस तरह यह निश्चित हुआ कि वर्णसंकर अंतर्जातीय विवाह से संबंधित है।

७.२.३. स्त्रियों के बारे में पश्चिमी सोच

और यूरोपीयनों को स्त्रियों के बारे में विशेष परिकल्पनाएँ थी। क्रिश्चियानिटी (Christianity) में एडल्ट्री (adultery) को सिन (sin) माना गया है⁶⁹। इसलिए यूरोप के विचारों में यह चिंता है कि स्त्रियाँ डेविल (devil) के सेडक्शन (seduction) से बिगड़कर परपुरुषासक्त हो जाती हैं। इसकी उच्च अवस्था को १९वीं सदी के विक्टोरियन मोरालिटी (Victorian morality) में देख सकते हैं⁷⁰। यूरोप के उस कालखंड की चर्चाओं में स्त्रियों का परपुरुषसंबंध बनाने पर अवज्ञा और चास्टिटी (chastity) पर विशेष गौरव दिखाई देता था। यूरोप की चर्चाओं में चास्टिटी बेल्ट (chastity belt)⁷¹ का उपयोग करने के विचार से स्त्रियों के बारे में यूरोपीयन संस्कृति की दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाती है। यूरोपीयन समाज में जो स्त्री जिम्मेदार पत्नी, माता, गृहिणी बनकर परपुरुषों में विरक्त रहती है उसे एक आदर्श महिला की तरह देखा जाता था⁷²। इसके विपरीत स्त्रियों को पतित या दुष्ट मान लिया जाता था। उस तरह की महिलाओं को अत्यंत तुच्छ मान लिया जाता था। एक स्त्री की ‘अच्छाई’ या ‘बुराई’ को निर्णय करने में परपुरुषसंभोग एक प्रमुख

⁶⁹ “You shall not commit adultery” यह दस commandments में एक है।

⁷⁰ Weeks 2017:27 & <http://www.vam.ac.uk/content/articles/s/sex-and-sexuality-19th-century/>

⁷¹ अधिक जानकारी के लिए – <https://www.livescience.com/amp/55390-what-are-chastity-belts.html> , https://link.springer.com/chapter/10.1057/9780230603097_2 Retrieved on 06.12.2021.

⁷² अधिक जानकारी के लिए – Coventry Patmore’s poem, “The Angel in the House”, John Stuart Mill in The Subjection of Women (1869) and innumerable number of handbooks on household management like Mrs. Beeton’s Book of Household Management that was published in 1861 that became a highly popular book.

मानदंड था। इसलिए यूरोपीयन समाज में वेश्याओं ने अत्यंत नीच स्थान पाई। इस तरह स्त्रियों के बारे में यूरोप में रही विशेष कल्पना ही भारतीय समाज के स्त्रियों के स्थान के बारे में विचार करने के लिए संरचना बनी। और यूरोपीयन अनुभूति की ये संरचनाएँ ही भगवद्गीता जैसे ग्रंथों को भाषान्तरण करने में पथदर्शक बनी। इसलिए यूरोपीयनों को स्त्रियों का दुष्ट होना मैथुन से संबंधित विषय ही लगा।

जिस तरह लुडोवेको दी वर्तेमा (Ludovico di Varthema) के उदाहरण में राजा के नरसिंह देवता की पूजा से और उसके बारे में वर्तेमा (Varthema) की व्याख्या से कोई लेना-देना नहीं है, ठीक उसी तरह भारतीय समाज में 'हिन्दू रिलिजन (religion)' है, उसके लिए मनु ने कानून बनाया है, उसके आधार पर समाज श्रेणीकृत हुआ है, उसमें स्त्रियों को नीचतम स्थान दिया गया है, स्त्रियाँ विश्वास के पात्र नहीं हैं, स्त्री परपुरुष से संभोग करने से दुष्ट हो जाती हैं, जैसे यूरोपीयन व्याख्याओं से भारतीय समाज के आचरणों से कोई संबंध नहीं है। यह यूरोपीयनों के अपनी संस्कृति की अनुभूति से दूसरी संस्कृति को देखने जैसा है। इसलिए इस चर्चा में भी स्त्रियों का दुष्ट होना परपुरुषमैथुन से और वर्णसंकर शब्द संतति या जातिसंकर से संबंधित विषय बने हैं। यद्यपि भारतीय ग्रंथों से यह निर्णित नहीं हुआ है, फिर भी सभी यूरोपीयन अनुवादकों को स्त्रियों का दुष्ट होना संभोग से और वर्णसंकर शब्द संतति से संबंधित दिखा है। इसका कारण यह है कि, उनकी संस्कृति में स्त्रियों का दुष्ट होना, विवाहनिषेध, उससे पैदा होने वाले संतति जैसे परिकल्पनाएँ हैं। इसलिए जब वे भगवद्गीता का भाषान्तरण करने लगे तब वे इस श्लोक को विशेष प्रकार से एक समान समझे हैं। इसलिए लगभग १८वीं सदी के बाद के यूरोपीयन भाषान्तरणों में यूरोपीयन संस्कृति की अनुभूति की छबी दिखती है न कि वे भाषान्तरण भारतीय ग्रंथों के बारे में कुछ कहते हैं।

७.३. औपनिवेशिक मानसिकता

इन भाषान्तरणों ने यूरोपीयन संस्कृति की अनुभूति के आधार पर भारतीय संस्कृति के चित्रण को सट्टा बनाए हैं। जैसे ही समय बीता और भारत में पश्चिमी शिक्षण सार्वजनिक हुआ भारतीयों ने यूरोपीयन अनुभूति से उत्पन्न इस वर्णन को ही अपना वास्तविक विवरण मान लिया। यह इन भाषान्तरणों में हम देख सकते हैं। इसलिए बाद के भारतीय अनुवादक और यूरोपीयन अनुवादकों के बीच कोई अंतर नहीं दिखाई

देता है। यानी यूरोपीयन राज समाप्त होने के बाद भी भारतीय समाज में उनके किए हुए वर्णनों को ही अपना वास्तविक और वैज्ञानिक विवरण की तरह मानने की और उसी तरह आचरण करने का रवैया दिखाई देता है। इसी को एस. एन. बालगंगाधर जी ने “औपनिवेशिक मानसिकता”⁷³ कहा है। यानी एक उपनिवेशवादी ने अपने उपनिवेशों की संस्कृतियों को विशेष प्रकार से समझकर व्याख्या किया है। यह उस उपनिवेश से संबंधित उपनिवेशवादी का अनुभव है। अगर उपनिवेश के लोग (Colonised) उपनिवेशों (Colony) के बारे में उपनिवेशवादी (Coloniser) की समझ और व्याख्या को ही ठीक समझ बैठते हैं तो उसे “औपनिवेशिक मानसिकता” (Colonial Consciousness) कहते हैं। एक उपनिवेश (Colony) स्वतंत्र होने के बाद भी उपनिवेशवाद को बनाए रखने की प्रक्रिया औपनिवेशिक मानसिकता है।

७.३.१. औपनिवेशिक मानसिकता – पूर्वसिद्धांत का समर्थन

हमने देखा कि पश्चिमी सांस्कृतिक संरचना भारतीय संस्कृति को विशिष्ट प्रकार से समझने के लिए सहायक बने हैं। और इस चर्चा से यह स्पष्ट है कि उसी संरचना ने गीता के इस श्लोक को विशेष प्रकार से समझने में सहायता की है। यानी भारतीय समाज में स्त्रियों को तुच्छ माना जाता था, ऐसा कहने के लिए आज इस श्लोक का उपयोग किया जाता है। लेकिन वास्तव में भारतीय समाज को लेकर अपनी

⁷³ इस विषय पर विशेष विचार किए हुए एस. एन. बालगंगाधर जी इस वस्तु-विषय को ‘औपनिवेशिक मानसिकता’ (Colonial consciousness) कहते हैं। उन्होंने अपने शोधप्रबंधों में इस पर विस्तार रूप से चर्चा की है। इन चर्चाओं के विवरण को इस लेख के दायरे में दे नहीं सकते हैं, लेकिन पाठकों के सुविधा के लिए संक्षेप में ‘औपनिवेशिक मानसिकता’ (Colonial consciousness) का प्रतिपादन किया गया है। जब एक देश दूसरे देश पर आक्रमण कर उसे अपने फायदे के लिए उपभोगता है तो उस देश को ‘उपनिवेश’ (colony) कहते हैं। लेकिन उपनिवेशवाद का मतलब केवल एक प्रदेश को आक्रमण कर उस पर राज करना नहीं है, बल्कि औपनिवेशिकप्रभुता के द्वारा उपनिवेश के लोगों के विचार कैसे बदलते हैं, इसके बारे में है। इतना ही नहीं, हाल ही में हमने जाना है कि उपनिवेशवाद और religion के बीच एक अटूट संबंध है। और स्पष्टता से कहे तो, religion अपने सार्वकालिक सत्य को religion की परिभाषा से परे एक वैश्विक सत्य की तरह विश्व की अन्य संस्कृतियों में प्रसार करता है, उस क्रम को ‘उपनिवेशवाद’ कह सकते हैं। तो यहाँ उपनिवेशवाद का मतलब यह है कि, एक रिलिजन (religion) अन्य संस्कृतियों को अपने पकड़ में लेने के लिए, धर्म-परिवर्तन इत्यादि के अलावा सेक्युलर (secular) रूप में समा लेने की प्रक्रिया है। इसको बालगंगाधर जी रिलिजन (religion) का सेक्युलराइज़ेशन (secularization) कहते हैं। एक रिलिजन (religion) के लिए धर्म-परिवर्तन जितना प्रमुख है, उतना ही सेक्युलराइज़ेशन (secularization) भी प्रमुख विषय है। यह सेक्युलराइज़ेशन (secularization) प्रक्रिया रिलिजन (religion) के सत्य को अनेक रूप में प्रसार करती है। इस सेक्युलराइज़ेशन (secularization) प्रक्रिया में उपनिवेशवाद एक प्रमुख साधन है। उपनिवेशवाद अन्य संस्कृतियों के अपने विचारधारा को विकृत कर देता है और अपने ही अनुभवों को न समझने जैसा कर देता है। इसको औपनिवेशिक मानसिकता कहा जाता है। यह मानसिकता, एक उपनिवेश स्वतंत्र होने पर भी अपने अनुभव को समझने के लिए बाधा बनकर उपनिवेशी बने रहने का क्रम है। इसी मानसिकता के कारण उन संस्कृति के लोगों के बोलने में और आचरणों में ज़मीन-आस्मान का फर्क होता है। और उपनिवेशी व्याख्याओं को ही अपनी संस्कृति की सटीक व्याख्या मान लेते हैं। इसलिए state जैसे उपनिवेशी (पश्चिमी) व्याख्याओं को ही अपनी संस्कृति से संबंधित व्याख्या समझकर, भारतीयों ने उसके अनुसार भाषान्तरण किए हैं इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। इस पर और अध्ययन के लिए – Balagangadhara 2012: 95-120।

सांस्कृतिक अनुभूति के आधार पर जो छबी यूरोपीयनों के मन में थी उसी से इस प्रकार के भाषान्तरण उत्पन्न हुए हैं। यानी ये भाषान्तरण पहले से ही मौजूद संरचना का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। बाद में इन्हें भाषान्तरणों को पहले से ही मौजूद संरचना की वास्तविकता के प्रमाण के रूप में उपयोग किया जा रहा है। यानी यहाँ जिसे *तर्क से निर्णय करना है उसे ही पूर्वसिद्धांत (प्रिमाईस् premise)*⁷⁴ बना लिया गया है। इसलिए इन भाषान्तरणों से सिद्ध निर्णय प्रबल बन जाते हैं। इस प्रकार के तर्कदोष को पेटिशियो प्रिन्किपि (petitio principii)⁷⁵ कहते हैं। इस तरह के भाषान्तरण यूरोपीयन संरचना को सबल बनाते हैं और अन्य अर्थ होने की संभावनाओं पर परदा डाल देते हैं। पेटिशियो प्रिन्किपि (petitio principii)⁷⁶ औपनिवेशिक मानसिकता का एक परिणाम है। औपनिवेशिक मानसिकता का एक और प्रमुख परिणाम है। वह यह है कि, औपनिवेशिक मानसिकता अनुभव और व्याख्याओं के बीच एक दरार बना देती है और हमारे ही अनुभव हमें अपरिचित हो जाते हैं।

७.३.२. औपनिवेशिक मानसिकता – अनुभूति का तिरस्कार

अगर हम उदाहरण के लिए वर्तमान श्लोक को ही लें, तो इस श्लोक की एक विशिष्ट व्याख्या बनी है। लेकिन महाभारत जैसे ग्रंथों के हमारे अनुभव में स्त्रियों का दुष्ट होना संभोग से संबंधित नहीं है। इसीलिए

⁷⁴ A statement or idea that is accepted as being true and that is used as the basis of an argument. <https://www.merriam-webster.com/dictionary/premise> Retrieved on 03.12.2021.

⁷⁵ “The fallacy of begging the question (petitio principii) can occur in a number of ways. One of them is nicely illustrated with Whately’s (1875 III §13) example: “to allow everyman an unbounded freedom of speech must always be, on the whole, advantageous to the State; for it is highly conducive to the interest of the Community, that each individual should enjoy a liberty perfectly unlimited, of expressing his sentiments.” This argument begs the question because the premise and conclusion are the very same proposition, albeit expressed in different words. It is a disguised instance of repetition which gives no reason for its apparent conclusion”. <https://plato.stanford.edu/entries/fallacies/> Retrieved on 03.12.2021.

⁷⁶ “When such presuppositions direct the framing of a description, the results are pre-determined. The story confirms what one already knew. This is what the logicians call petitio principii: the fallacy of assuming the truth of what one wants to prove. In this sense, this ‘truth’ about the ‘White Man’s Burden’ underpins, sustains and confirms both the British descriptions of India and contemporary discourses about India, whether in India or in the West... This then is colonial consciousness. It is not merely the belief in the civilizational superiority of one particular civilization. It is a belief that functions both as a cognitive premise (whether as a suppressed premise or as an explicit one) and as a logical conclusion of the descriptions of the colonized and, as such, it is a massive exercise in petitio principii. Colonialism involves creating and sustaining such a consciousness”. Balagangadadhara 2012: 111-112.

कुंती, माद्री, अंबिका, अंबालिका, सत्यवती जैसे स्त्रियों को दुष्ट नहीं कहते हैं। उसी तरह परपुरुष के संभोग से जन्मे धृतराष्ट्र, पांडु जैसे संतति को वर्णसंकर नहीं कहते हैं। यानी महाभारत जैसे ग्रंथों के हमारे अनुभव में स्त्रियों का दुष्ट होना अंतर्जातिविवाह से संबंधित विषय और वर्णसंकर को उस विवाह से पैदा होने वाली संतति से संबंधित विषय नहीं माना गया है, लेकिन ये भाषान्तरण महाभारत जैसे ग्रंथों को समझने की हमारी अनुभूति के विपरीत प्रकार से नई व्याख्याएँ दे रही हैं। और ग्रंथों से संबंधित हमारे अनुभवों पर ये भाषान्तरण विचार नहीं करते हैं। अगर हमारे अनुभवों को गंभीरता से लिया गया तो यह दिखाई देगा की ये भाषान्तरण समस्या खड़ी कर देती हैं। लेकिन यह औपनिवेशिक मानसिकता, समाज में रहे साधारण अनुभवों को हमारे विचारधारा में आने से रोक लगा देती हैं। यानी यह मानसिकता, हमें हमारे ही अनुभव जगत से दूर करने की प्रक्रिया होती है। इस तरह औपनिवेशिक मानसिकता एक तरफ से बेगाने व्याख्याओं को हमारे साथ आधिकारिक और वैज्ञानिक प्रकार से जैसे जोड़ देती है और दूसरी तरफ हमारे अपने अनुभवों का उपयोग करने से तिरस्कार कर देती हैं।

७.३.३. क्या यह भाषा की समस्या है?

इसलिए भाषान्तरण की यह समस्या यद्यपि भाषा के माध्यम से चर्चा की जा रही है, वास्तव में यह भाषास्तर की समस्या नहीं है। यदि यह केवल भाषा की समस्या होती तो सही शब्दों के प्रयोग से इस समस्या को सुलझा सकते थे। यह एक संस्कृति से संबंधित ज्ञान की समस्या को दिखाती है। यानी यह औपनिवेशिक मानसिकता, जिसे ज्ञान के आधार पर प्रश्न करके विचार करना था उसे अवसर दिए बिना अलग प्रकार की चर्चा को बढ़ा रही है। और ज्ञानोत्पन्न करने की संभावनाओं पर भी परदा डाल रही है। इसलिए औपनिवेशिक मानसिकता से ज्ञानोदय होना असंभव ही है। इसीलिए भाषान्तरण की समस्या को भाषा की समस्या मानकर विचार करना व्यर्थ है। और इस तरह के भाषान्तरणों में सांस्कृतिक भिन्नता की समस्याएँ बुन गई हैं। अगर वहाँ औपनिवेशिक मानसिकता होगी तो वह ज्ञान पाने की साधनों को ही तिरस्कृत कर देती है। इसलिए भाषान्तरण की समस्याओं में अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं और औपनिवेशिक मानसिकता प्रमुख समस्या खड़ी कर देती है।

८. इस चर्चा की आवश्यकता क्या है?

इस चर्चा से यह प्रश्न उठ सकता है कि इतने समय तक यह चर्चा किस कारण किया गया और इसकी आवश्यकता क्या है। कुछ लोगों को यह छिद्रान्वेषण का प्रयास या बाल की खाल खींचने की तरह दिख सकता है। लेकिन भारतीय ग्रंथ क्या कह रहे हैं और उनसे भारतीय समाज के बारे में क्या समझ मिलता है जैसे प्रश्नों पर यदि गंभीरता से विचार करके भाषान्तरणों का अध्ययन करने लगे तो हमने देखा कि वर्तमान भाषान्तरण हमें किसी प्रकार से सहायता नहीं करते हैं। उतना ही नहीं हमें यह भी स्पष्ट हुआ कि ये भाषान्तरण ग्रंथ और समाज के बारे में अत्यंत असंगत और विकृत वर्णन दे रहे हैं।

तो अगर पूछ लें कि क्या इन भाषान्तरणों के सिवाय उन ग्रंथों को और उससे समाज के बारे में समझने का कोई और विकल्प है तो हमें कई नए विकल्प दिखाई देते हैं। जब महाभारत जैसे ग्रंथों को देखते हैं तो यह दिखाई देता है कि वर्णसंकर एक ऐसी घटना है जो समाज में कदापि नहीं होना चाहिए। महाभारत में कहा गया है कि वर्णसंकर न होना ही सुराज्य का लक्षण है⁷⁷। महाभारत के ययाति उपाख्यान में जब ययाति शुक्राचार्य से वरदान मांगता है तो वह यह मांगता है कि वर्णसंकर से उत्पन्न होने वाला अधर्म मुझे न छूए⁷⁸। राजा ययाति को यह वरदान अत्यंत महत्वपूर्ण लगा। गीता में कृष्ण कहता है कि अगर वह कर्म नहीं करता है तो वर्णसंकर हो जाता है⁷⁹। मनु कहता है कि अगर दंडविधि सही नहीं हो तो वर्णसंकर हो जाता है, जिससे सर्वनाश हो जाता है⁸⁰। अर्थशास्त्र में कहा गया है कि संकर से संसार नष्ट हो जाता है इसलिए राजा को सभी वर्ण को अपने स्वधर्म से व्यभिचार करने से निरोध करना है⁸¹। इन सभी वाक्यों को और वर्णसंकर से संबंधित विचारों को देखने से यह लगता है कि वर्णसंकर एक ऐसी घटना है जो समाज में कदापि नहीं होनी चाहिए। उतना ही नहीं, वर्णसंकर कोई ऐसी घटना नहीं जो किसी

⁷⁷ न वर्णसङ्करकरो नाकृष्यकरकृञ्जनः । न पापकृत्कश्चिदासीत्तस्मिन्नाजनि शासति ॥ महाभारत १/६८/६

⁷⁸ अधर्मो न स्पृशेदेष महान् मामिह भार्गव । वर्णसंकरजो ब्रह्मत्रिति त्वां प्रवृणोम्यहम् ॥ महाभारत १/८१/३२

⁷⁹ भागवद्गीता ३/२४

⁸⁰ तत्समुत्थो हि लोकस्य जायते वर्णसङ्करः । येन मूलहरोधर्मः सर्वनाशाय कल्पते ॥ मनु ८/३५३

⁸¹ तस्यातिक्रमे लोकः सङ्करात् उच्छिद्येत । तस्मात् स्वधर्मं भूतानां राजा न व्यभिचारयेत् । अर्थशास्त्रम् १/१/३

छोटे प्रदेश या कुछ लोगों से संबंधित है, बल्कि समाज में बड़े पैमाने में परिणाम करने वाली एक महत्वपूर्ण घटना है।

८.१. भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थान

आज के प्रचलित चर्चाओं में यह कहा जा रहा है कि वर्णसंकर (अंतर्जातिविवाह) को करना है, अगर वर्णसंकर होगा तभी भारतीय समाज विकसित हो सकता है⁸²। लेकिन भारतीय ग्रंथ, चाहे वह अर्थशास्त्र हो या महाभारत हो या मनुस्मृति हो, वे आज की चर्चाओं से विपरीत कहते हैं कि वर्णसंकर से संसार नष्ट हो जाता है, इसलिए वह भीषण घटना हरगीज नहीं होनी चाहिए। उससे अधर्म बढ़ता है। तो कुछ प्रश्न पड़ते हैं, जैसे, हमारे पूर्वजों ने ऐसा क्यों कहा कि, वर्णसंकर कभी नहीं होना चाहिए? वह किस तरह की घटना है? अगर वर्णसंकर के बारे में प्राचीन ग्रंथों में इतनी गंभीरता से विचार किया गया है, तो वह मात्र कुछ स्त्रियों का कुछ पुरुषों से संभोग करने की बात नहीं हो सकती है।

और यहाँ गौरतलब की बात है कि गीता में कहा गया है कि स्त्रियों के दुष्ट हो जाने से वर्णसंकर होता है। यानी यह अर्थ निकलता है कि स्त्रियों को दुष्ट होने के लिए अनेक वजह है और उनके दुष्ट होने से वर्णसंकर हो जाता है। जैसे कि महाभारत जैसे ग्रंथों में कहा गया है कि वर्णसंकर एक भीषण घटना है, जो समाज में कभी नहीं होना चाहिए, जिससे संसार नष्ट हो जाता है, तो गीता के वाक्य से यह समझ आता है कि इस भीषण घटना को रोकने में स्त्रियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। और जैसे कि महाभारत में सुराज्य का लक्षण कहा गया है- जहाँ वर्णसंकर न हो, तो इन वाक्यों से यह समझ आता है कि इस प्रकार के वर्णसंकर को रोकने में और उसके द्वारा एक देश में सुराज्य लाने में स्त्रियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वर्णसंकर न होने में अगर स्त्रियों की भूमिका महत्वपूर्ण है, तो समाज में स्त्रियों का स्थान किस प्रकार का था? यदि वर्णसंकर समाज में अनपेक्षित घटना है, तो उसे रोकने में स्त्रियों की भूमिका क्या है?

⁸²उदाहरण के लिए –

https://roundtableindia.co.in/index.php?option=com_content&view=article&id=6796:crossing-endogamic-boundaries&catid=119:feature&Itemid=132 Retrieved on 03.12.2021.

समाज में उन्हें यह भूमिका है, ऐसा क्यों मानते थे? इस तरह के प्रश्न अब सामने आते हैं। लेकिन इन सब प्रश्नों पर विचार करना वर्तमान लेख के दायरे में नहीं है।

लेकिन जैसे कि अब तक चर्चा की गई है, अगर यह माने कि वर्तमान भाषान्तरण चाहे वे भारतीयों का हो या यूरोपीयन लोगों का, वे यूरोप की अनूभूति की संरचना से उत्पन्न व्याख्याएँ हैं और भारतीय ग्रंथों के बारे में कुछ नहीं कहते हैं, तो उपरोक्त अनेक प्रश्न महत्वपूर्ण बन जाते हैं। जिससे इन पर विचार कर सकते हैं कि भारतीय दृष्टि में स्त्री का स्थान क्या है, वर्ण किस तरह के समूह हैं, उनसे और राज्य से क्या संबंध है इत्यादि। लेकिन अगर वर्तमान भाषान्तरण को ही सही माने तो इन सब प्रश्नों पर विचार करने का और उससे भारतीय समाज और ग्रंथों के बारे में जानने की संभावनाएँ लुप्त हो जाती हैं।

८.२. उपसंहार

“इस चर्चा की आवश्यकता क्या है?” अगर इस प्रश्न पर लौटे, तो हमें यह पता चलता है कि औपनिवेशिक मानसिकता भारतीय समाज और ग्रंथों के बारे में ज्ञान पाने की संभावना को ढक देती हैं। लेकिन अगर उस मानसिकता से बाहर निकले, तो नए प्रश्न करने की और भारतीय समाज और अनुभव पर गंभीरता से विचार करने की संभावनाएँ खुल जाती हैं। इसलिए पहले यह समझना आवश्यक है कि हमारे ग्रंथ क्या कह रहे हैं और उससे भारतीय समाज के बारे में क्या जान सकते हैं, चाहे हम अपने पूर्वजों को माने या न माने। इसलिए औपनिवेशिक मानसिकता की जंजीरों से मुक्त होकर ग्रंथों को समझने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए बौद्धिक क्षेत्र को आज एक प्रश्न पूछ लेना चाहिए, कि क्या सच में भारतीय पूर्वजों के विचारों का जानना है या औपनिवेशिक व्याख्या के पुनर्निर्माण ही काफी हैं।

आभार :

यह लेख प्रमुख रूप से एस. एन. बालगंगाधर जी के विचारों से और उनके साथ किए गए संवादों से रचित हैं। गीता के माध्यम से अनुभव के आधार पर भारतीय ग्रंथों को गंभीरता से अध्ययन करने के लिए और इस लेख के विषय पर विचार करने के लिए निमित्त बने एस. एन. बालगंगाधर जी को हम

विशेष रूप से आभारी है। इस विषय पर विचार-विमर्श में भाग लेनेवाले सारिका राव, जेकब डी. रूवर, डंकिन जळकि, सूफिया पठाण, विनायक हंपिहोळि और नटेश एल. इनको, इस लेख को पूर्णतः निरीक्षण कर उपयुक्त सलाह देने वाले राजाराम हेगडे, षण्मुख ए., वासुदेव ऐताळ और हर्षित जोसेफ़ इनको, और हमारे अनुसंधान कार्यों के लिए सतत प्रोत्साहन दे रहे एम. पी. कुमार इनको, CESS के साथी और India Studies विभाग के छात्रों को हम कृतज्ञता समर्पण करते हैं।

ग्रंथसूची :

डी.वी.जी. (२०१४), जीवनधर्मयोग, काव्यालय प्रकाशन, मैसूरु । (कन्नड़ में)

कुलकर्णी, श्रीनिवास कृष्ण, (१९३५), कन्नड़ सार्थ ज्ञानेश्वरी, श्री विठ्ठल मंदिर, विजयपुर । (कन्नड़ में)

हर्षित, जोसेफ़ और चैत्र, एम. एस. (२०२०), सांस्कृतिक भिन्नता और भाषान्तर, भाषाभारती, खंड १, अंक २, कुर्वेपु भाषाभारती प्राधिकार । (कन्नड़ मूल)

राजाराम, हेगडे, (अनुवाद), (२०१९), बौद्धिक दासता में भारत, वसंत प्रकाशन । (कन्नड़ में)

रंगनाथ शर्मा एन., (१९९६), अमरकोश, सुविद्या प्रकाशन, बेंगलूरु ।

ज्ञानमोठे, कृष्णाजी डोंग्रप्प, (२००६), सार्थ ज्ञानेश्वरी, श्री संत वाङ्मय सेवा समिति, कोप्पल । (कन्नड़ में)

श्री श्रीमत् ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, (२०१६), भगवद्गीता यथारूप, बेंगलूरु । (कन्नड़ में)

श्री श्री सच्चिदानंद सरस्वती स्वामीजी, (अनुवाद), (२०१७), श्री भगवद्गीता, श्री शांकरभाष्य सहित, अध्यात्म प्रकाश कार्यालय । (कन्नड़ में)

स्वामी रामसुखदास (२०१४), श्रीमद् भगवद्गीता, साधकसंजीविनी हिंदी टीका का कन्नड़ानुवाद, भाग १, गीताप्रेस, गोरखपुर । (कन्नड़ में)

Adluri, Vishwa & Bagchee, Joydeep (2014). *The Nay Science. A History of German Indology*. Oxford University Press.

Apte, Hari Narayana. (Ed.). (1901). *Srimad Bhagavad gita with Gudhartha Deepika*. Anandashrama mudranalaya.

Apte, Vinayayak Ganesh. (Ed.). (1923). *Srimad Bhagavad gita with Ramanujacharya bhasya*. Anandashrama mudranalaya.

Apte, Vinayayak Ganesh. (Ed.). (1939). *Srimad Bhagavad gita with Tika of Rajanaka Ramakavi*. Anandashrama mudranalaya.

Arnold, Edwin. (Tr.). (1900). *The Song Celestial. Or Bhagavad-Gita (From the Mahabharata)*. New York: Hanson & Comba.

Balagangadhara, S.N. (2012). *Reconceptualizing India Studies*. Oxford University Press.

Bayly, Susan. (1999). *Caste, Society and Politics in India from the Eighteenth Century to the Modern Age*. Cambridge University Press.

Belvalkar, S.K. (Ed.). (1968). *The Bhagavadgita*. Bhandarkar Oriental Research Institute.

Belvalkar, S.K. (Ed.). (1941). *Shrimad Bhagadgita with the commentary of Ananda Vardhana*. Bilvakunja Publishing House.

Charavarti, Uma. (1993). *Conceptualizing Brahmanical Patriarchy in Early India, Gender, Caste, Class and State*. *Economic and Political Weekly*. 28 (14). 579-585.

De Roover, J. (2017). A nation of tribes and priests: the Jews and the immorality of the caste system. In P. Shah, D. Jalki, S. Pathan, & M. Farék (Eds.), *Western foundations of the Caste system*. 173–220.

Debroy, Bibek, (Tr.). (2005). *The Bhagavad Gita*. Penguin Books India. New Delhi.

Dhand, Arti. (2008). *Woman as Fire, Woman as Sage: Sexual Ideology in the Mahābhārata*. Albany: State University of New York Press.

Dodson, Michael. S. (2010). *Contesting Translations: Orientalism and the Interpretation of the Vedas. An Intellectual History for India*. 35-51.

Fárek M. (2017) Were Shramana and Bhakti Movements Against the Caste System? In: Fárek M., Jalki D., Pathan S., Shah P. (Eds.), *Western Foundations of the Caste System*. 127-172.

Goyandaka, Harikrishnadas. (1988). *Srimad Bhagavadgita with Shankara bhasya Hindi translation*. Gitapress. Gorakhpur.

JAL, M. (2014). Asiatic Mode of Production, Caste and the Indian Left. *Economic and Political Weekly*, 49(19). 41–49.

Kosambi, D. D. (1961). Social and Economic Aspects of the Bhagavad Gītā. *Journal of the Economic and Social History of the Orient*. 4(2). 198–224.

Maharaja Ranabir Singh commissioned Bhagavata Gita with 18 Commentaries.
<https://archive.org/search.php?query=subject%3A%2218+Commentary+Bhagvata+Gita%22> Retrieved on: 29/11/2021.

Mani, Braj Ranjan. (2015). Debrahmanising History. Dominance and Resistance in Indian Society. Extensively Revised Edition. Manohar Publishers.

Mitchell, Stephen. (Tr.). (2000). Bhagavad Gita: A New Translation. Three Rivers Press.

Monier-Williams, M. (1899). A Sanskrit-English Dictionary. Etymologically and Philologically Arranged with Special Reference to Cognate Indo-European Languages. Oxford University Press.

Moon, Vasant. (Com.). (2014). Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches. Vol. 3. Dr. Ambedkar Foundation.

Nikolenko, Mikhail. (Tr.). (2011). Bhagavad Gita with Commentaries. <http://swami-center.org/> Accessed on 27.11.2021.

Olivelle, Patrick. (Tr.). (2000). Dharmasutras – The Law Codes of Apastamba, Gautama, Baudhayana, and Vasistha. Motilal Banarsidass.

Paramahansa Yogananda. (tr.). (1995). God Talks with Arjuna: The Bhagavad Gita. Royal Science of God- Realization. Self-Realization Fellowship.

Rathore, Aakash Singh. & Mohapatra, Rimina (eds.) (2016). Hegel's India: A Reinterpretation, with Texts, Oxford University Press India.

Ruthven, Malise. (2004). Fundamentalism, The Search for Meaning. Oxford University Press.

Sadhale, Gajanana Shastri. (Ed.). (1935). The Bhagavad Gita with eleven commentaries. Gujrati Printing Press.

Sargeant, Winthrop. (Tr.). (2009). The Bhagavad Gita. Christopher Key Chapple (ed.), Suny Series in Cultural Perspectives. State University of New York Press.

Shastri, Gosvami Damodar. (Ed.). (1929). The Kamasutra by Sri Vatsyayana Muni. With the commentary Jayamalagala of Yashodar. Vidya Vilas Press.

Shastri, Jeevarama Lallurama. (Ed.). (1912). Srimad Bhagaad geeta containing eight commentaries. The Gujrati printing press.

Shastri, Madhusudan Kaul. (Ed.). (1943). The Bhagavadgita with the commentary of Rajanaka Ramakantha. Nirnaya Sagar Press.

Shastri, Satyanarayana datta. (Tr.). Mahabharata with Hindi translation. 6(1). Gita press. Gorakhpur.

Sri Aurobindo. (1997). Essays on the Gita. Sri Aurobindo Ashram Trust. Pondicherry.

Sri Aurobindo. (tr.). (1991). The Bhagavad Gita. Sri Aurobindo Ashram Trust.

Swami Prabhupada. (Tr.). (1972). Bhagavad Gita As It Is. <https://prabhupadabooks.com/> (accessed on 27.11.2021).

Unni N.P. (Tr.). (2018). The Arthasastra of Kautilya with the commentary Srimula. New Bharatiya Book Corporation.

Weeks, Jeffrey. (2017). "The theorisation of sex", Sex, Politics and Society. Routledge.

Wilkins, Charles. (1785). The Bhagavad-geeta or Dialogs of Kreeshna and Arjoon. London.

Williams. M. M. (2011). A Sanskrit English Dictionary. Motilal Banarasidass Publishers.

अंतरजाल शृंखला के सूची :

- वाल्मीकी रामायण – <https://www.valmiki.iitk.ac.in/>
- मोनियर विलियम्स शब्दकोश – <https://www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/scans/MWScan/2020/web/webtc2/index.php>